॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

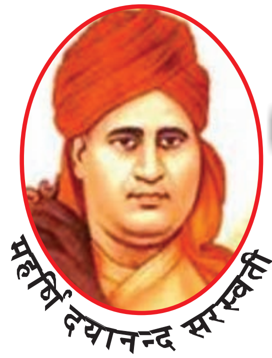

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

मई, 2015 वर्ष 18, अंक 5 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये
विक्रमी सम्वत् 2072 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 24

जन्मदिवस पर विशेष

महात्मा हंसराज का मूल उद्देश्य क्या था ?

❒ पं. उम्मेद सिंह विशारद

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्य महात्मा हंसराज जी ने अखण्ड भारत किन्तु पराधीन लाहौर में 1 जून 1886 को डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना की थी।, लाहौर पंजाब की राजधानी थी। कुछ वर्षो बाद यह स्कूल कॉलेज बन गया। 1947 में डी.ए.वी. कॉलेज के छात्रों की जनसंख्या किसी भी विश्वविद्यालय से कम नहीं थी, इसका प्रमुख श्रेय महात्मा हंसराज को जाता है। वह जीवन पर्यन्त डी.ए.वी. कॉलेज के प्रधानाचार्य रहे, किन्तु वेतन नहीं लिया।

महात्मा हंसराज जी का जन्म 19 अप्रैल सन् 1864 को बजवाडा ग्राम होशियारपुर में हुआ था। बचपन से कुशाग्र बुद्धि के थे, प्रतिभाशाली थे, परिवार ने मिशन स्कूल लाहौर में भर्ती कराया और विपरीत परिस्थितियों के होते हुए मेधावी हंसराज ने बी.ए. द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। उन्हीं दिनों लाहौर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का आगमन हुआ और उनके प्रवचन सुनने हंसराज जी जाया करते थे एक दिन प्रवचन का विषय था उत्तम मानव में क्या-क्या गुण होने चाहिए। महर्षि जी ने प्रवचन में कहा कि छः गुण धारण करने से मानव उत्तम हो सकता है। 1. पठन-पाठन, 2. उत्तम स्वभाव, 3. सत्य बोलने का व्रत, 4. अभिमान से रहित, 5. संसार के कष्ट दूर करने को हमेशा तत्पर रहना, 6. परोपकार के कार्यो में संलग्न रहना। इन गुणों से मनुष्य का जीवन सफल होता है। उसी दिन से बालक हंसराज के मन में इन प्रवचनों का गहरा प्रभाव पड़ा और निश्चय किया कि मैं आदर्श मानव बनूंगा।

30 अक्टूबर 1823 को महर्षि दयानन्द जी दिवंगत (बलिदान) हुए। उनकी स्मृति में वरिष्ठ आर्यो ने सर्व श्री हंसराज जी मुनिवर पं. गुरुदत्त, लाल लाजपत राय, राजा नरेन्द्रनाथ, श्री द्वारिकादास आदि महानुभावों ने डी.ए.वी. (दयानन्द ऐंग्लो विद्यालय खोलने का सर्वसम्मति से निश्चय किया। धनाभाव के कारण डी.ए.वी. स्कूल चलाने में कठिनाई आ रही है। श्री हंसराज जी ने अपने बड़े भाई लाल मुल्कराज जी के सम्मुख अपने विचार रखे कि मैं अपना जीवन आर्य समाज को देना चाहता हूँ। बड़े भाई ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और कहा अपने वेतन का आधा 40 रूपये तुमको देता हूँ और इससे प्रेरित होकर 3 नवम्बर 1885 को लाहौर आर्य समाज के अन्तरग सभा में सूचित किया कि मैं आजीवन अवैतनिक डी.ए.वी. स्कूल को अपनी सेवाएं देना चाहता हूँ।

1 जून 1886 को लाहौर में डी.ए.वी. स्कूल इनके प्रयास से ही डी.ए.वी. कॉलेज बन गया। उसके प्रधानाध्यापक के रूप में इन्होंने अपनी सेवायें देनी प्रारम्भ की और डी.ए.वी. कॉलेज को बहुत ऊँचा उठाया। विदेशी भी उनकी प्रतिभा के सामने नतमस्तक हो गये और सरकार से अनुदान लिये बिना दो वर्षो में महाविद्यालय में बदल दिया।

महात्मा हंसराज जी की प्रेरणा से अनेक युवक सादा जीवन खादी पहनावा के वेश में अपनी सेवाएं देने लगे। श्री हंसराज जी ने डी.ए.वी. कॉलेज के प्रिन्सिपल एवं आर्य समाज के प्रधान के रूप में ही नहीं वरन् एक सच्चे समाज सुधारक और कर्मवीर के रूप में सेवाएं दी जो सदैव स्मरणीय रहेंगी।

महात्मा हंसराज जी 1894 को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रथम प्रधान पद पर सुशोभित किया गया। 1922 में लाहौर में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की। अधिक परिश्रम के कारण उनको पेट के रोग ने घेर लिया। उन्होंने महात्मा आनन्द स्वामी को प्रधान पद सौंप दिया। 20 दिन की गम्भीर बीमारी के कारण (शेष पृष्ठ 22 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महात्मा हंसराज पावन जयन्ती समारोह 2015 सोलन (हि.प्र.)

'आस्था पर्व' की चित्रमय झलकियां

आयोजक: डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

(विस्तृत जानकारी अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी)

अच्छा सोचें, अच्छा बोलें, अच्छा करें आचरण

यदि हम अपने जीवन में सद्‌गुणों का विस्तार करना चाहते हैं, तो उसके लिए तीन सिद्धान्त हैं। हम उन सिद्धांतों को 'त्रि-आयामी' सिद्धान्त कह सकते हैं। जो कोई भी इन तीन सिद्धान्तों को अपनाता है, उसके भीतर में सद्‌गुणों का विस्तार होता ही है।

गुण हमारी निजी सम्पत्ति हैं। गुण बाहर से उपलब्ध नहीं होते। उनका भीतर से प्रकटीकरण होता है। ईश्वर अनन्त गुणी हैं, अनन्त ज्ञानी हैं, पर ईश्वर के अनन्त गुण हमारे अंदर प्रवेश नहीं कर सकते। आत्मा में अनन्त ज्ञान विद्यमान है। बस उसका प्रकटीकरण करना होगा। गुणी के गुण हमारे अंदर 'प्रवेश' नहीं कर सकते, पर जीवात्मा उन विद्यमान अनन्त गुणों को अपने भीतर 'प्रकट' जरूर कर सकता है।

यह ध्यान में रहे। दुर्गुण बाहर से आ सकते हैं, पर गुण भीतर से ही प्रकट होते हैं। दुर्गुणों का प्रवेश जल्दी होता है और ज्यादा होता है। एक दुर्गुण जीवन में यदि स्थान बना लेता है तो वह अनेक दुर्गुणों को प्रवेश करा देता है। मान लें, एक व्यक्ति में झूठ बोलने का दुर्गण आ गया। एक झूठ हजारों बुराइयों का प्रवेश-द्वार बन जाता है। इसीलिए दुर्गुणों को दूर करने के लिए सद्‌गुणों के विस्तार के लिए, विचार करना परमावयश्क है। यहां हम उस तत्व पर विचार करेंगे कि सद्‌गुण क्या है? कैसे आते हैं?

सद्‌गुणों के विस्तार के लिए तीन सिद्धान्त हैं। सबसे पहला सिद्धान्त है-अच्छा सोचें। दूसरा सिद्धान्त-अच्छा बोलें। तीसरा सिद्धान्त है-अच्छा आचरण करें। अच्छा सोचें, अच्छा बोलें, ये तीन सिद्धान्त जीवन में सद्‌गुणों का विस्तार करते हैं। अच्छा सोचें तो जीवन में सद्‌गुण आ सकते हैं। हमारी सोच अच्छी है तो जीवन भी निश्चित सुंदर बनेगा।

हमारे ऋषियो ने अच्छा बोलने को पहले नहीं रखा, पहले रखा-अच्छा सोचें। क्योंकि व्यक्ति जैसा सोचता है, वैसा बोलता है और जैसा बोलता है, वैसा आचरण करता है। आप कहते हैं-जैसी कथनी वैसी करणी। जिसकी कथनी सही है, उसकी करणी भी सही होनी चाहिए। कथनी जैसी करणी देखकर लोग स्वत: कह देंगे, इसका क्या कहना? इसकी तो कथनी-करणी एक समान है, जैसा कहता है, वैसा करता है।

जीवन निर्माण के यह तीन सिद्धान्त यदि अपना लिये जायें तो सद्‌गुण प्रकट होंगे ही। हर जीव आगे बढ़ना चाहता है, मनुष्य तो क्या, जिसमें भी चेतना है, वह चाहे वनस्पति ही क्यों न हो? वह भी आगे बढ़ना चाहता है। एक बीज पेड़ बनना चाहता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से आगे बढ़ना चाहता है। हम इस प्रकार भी इसे समझ सकते हैं कि दो प्रकार के व्यक्ति ही जीवन में प्रगति को प्राप्त करते हैं-एक वह जिसमें लचीलापन हो, दूसरा वह जिसमें सुन्दर सोच हो। हम सद्‌गुणों का विस्तार करना चाहते हैं तो पहले अच्छा सोचें। जो छोटी सोच रखता है, वह छोटा ही रहता है। सोच में विशालता, व्यापकता और सकारात्मकता होनी चाहिए। व्यक्ति के महान्‌ बनने में सोच का बड़ा प्रभाव होता है। आप जैसा सोचते हैं, वैसा ही आगे का मार्ग प्रशस्त होता है।

सोच के दो पहलू हैं-एक सकारात्मक, दूसरा नकारात्मक। सकारात्मक सोच से जीवन स्वर्ग और नकारात्मक सोच से जीवन नरक बनता है। एक गिलास है उसमें पानी है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति कहता है-गिलास में आधा पानी भरा है, नकारात्मक सोच रखने वाले व्यक्ति का कथन होता है-आधा गिलास खाली है। देखा जाये तो दोनों का कथन अपनी-अपनी अपेक्षा से सही है। पर व्यक्ति जैसा सोचता है, वैसा ही उसका जीवन बनता चला जाता है और देखिये, एक कहता है-दो रात के बीच में एक दिन आता है और दूसरा कहता है दो दिन के बीच में एक रात आती है। एक है जो दिन के उजाले को देख रहा है, दूसरा है जो रात के अन्धेरे को महत्व दे रहा है। भावार्थ है-सकारात्मक व्यक्ति उजाला देखता है, इसलिए उसका जीवन उज्जवल होता है जबकि नकारात्मक व्यक्ति अंधेरे को देखता है इसलिए उसके जीवन में दु:ख के समान अंधेरा होता है। व्यक्ति की सोच सही है तो कहता है-समय ज्यादा है, काम कम है। सोच विपरीत होने पर वह तो कहता है-मेरे पास काम ज्यादा है, समय कम है।

यदि हम अपने कार्य को सृजनात्मक और व्यवहार को समन्वयात्मक बनाना चाहते हैं तो हमें सर्वप्रथम सोच सकारात्मक बनानी होगी। आप अच्छा सोचें! सोच में लचीलापन नहीं तो जीवन में विकास और प्रकाश होने वाला नहीं है। कहते हैं- **सोचो वही जो बोल सको। बोलो वही जो लिख सको। लिखो वही, जिसके नीचे हस्ताक्षर कर सको।।**

व्यक्ति के मस्तिष्क में दिन भर में कितने विचार चलते हैं? हम सारे विचार व्यक्त नहीं कर पाते। आज ऐसे व्यक्ति हैं, जिनका निरर्थक विचारों में समय बीत रहा है। विचारों में न जाने कितना कूड़ा भरा है। शहर की गलियों में जितना कूड़ा नहीं उससे कहीं ज्यादा कूड़ा नकारात्मक सोच रखने वालों के विचारों में है। ध्यान रखियेगा, विचारों में यदि मलीनता है तो आत्मा में निर्मलता कैसे सम्भव है? आत्मा को पवित्र बनाना है तो विचारों की निर्मलता आवश्यक है।

सोचो वही जो बोल सको। घर में माता-पिता है, पत्नी है, बच्चे हैं, उन्हें कौन सी सोच अच्छी लगती है? अच्छी सोच सबके लिए अच्छी होती है। दिन भर में न जाने कितने-कितने विचार चलते हैं। दिन में ही क्यों? आगे बढ़कर कहूँ-रात्रि में व्यक्ति के सो जाने पर भी विचारों की गति मन्द और बन्द नहीं होती। दिन में सिर्फ विचार उभरते हैं, मगर वही विचार व्यक्ति के सो जाने पर चित्र उभर कर हमारे सामने आते हैं। इसलिए कहा गया- **दिन में जो विचार चलते हैं, उसे कल्पना कहते हैं। रात में जो विचार चलते हैं, उसे सपना कहते हैं।** हमें विचारों की परिक्रमा को समझना होगा, नहीं तो जीवन व्यस्त कम, अस्त-व्यस्त ज्यादा हो जाएगा। इसके लिए हमें सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। इसलिए ऋषियों ने पहला सूत्र दिया-'अच्छा सोचो।' दूसरा सूत्र है-'अच्छा बोलो।'

बोलना एक कला है। बोली से ही दुलार होता है तो बोली से ही लड़ाई होती है। शरीर में इन्द्रियों की विशेषता देखिए। इन्द्रियों में से कुछ इन्द्रियों के काम एक हैं और द्वार एक से अधिक हैं जबकि एक इन्द्रिय के द्वार एक है, काम दो हैं। इसे हम समझें- कान-2 काम-1 (सुनना), आँख-2 काम-1 (देखना), नाक-2 (छिद्रं) काम-1 (सूंघना), जीभ-1 काम-2 (बोलना, खाना)।

जीभ के दो काम है-बोलना और खाना। देखिये, बोलकर यह इज्जत बिगाड़ती है और खाकर यह 'पेट' बिगाड़ती है।

बोलना एक कला है। जो इस कला को सीख लेता है, उसके जीवन में सद्‌गुण का विस्तार होता है। जो अच्छा बोलता है, उसे सब

सुनना चाहते हैं। कोयल और कौआ दोनों जाति से समान है। दोनों का रंग काला समान है। इसप्रकार से समान होते हुए भी वाणी में दोनों की समानता नहीं है।

इसीलिए कहा जाता है- **कुछ लोगों की कुछ बातों का इतना असर होता है कि, कुछ दिल में उतर जाते हैं, कुछ दिल से उतर जाते है।** संसार में दो तरह के व्यापारी होते हैं। एक मिठाई बेचने वाला, दूसरा मिर्ची बेचने वाला अर्थात् मीठा बोलने वाला तीखी चीज को बेच देता है, जबकि कड़वा बोलने वाले की मीठी चीज भी धरी-की-धरी रह जाती है।

मीठा खा लेने से जीभ कुछ समय के लिए मीठी जरूर हो सकती है, मगर मीठा बोलने से तो जीवन ही मीठा हो जाता है। इसलिए सद्गुणों के विस्तार के लिए दूसरा सिद्धान्त है-अच्छा बोलो। हम सबको त्रिसूत्रीय मन्त्र को अपनाना है-अच्छा सोचो, अच्छा बोलो और तीसरा सिद्धान्त है-अच्छा आचरण करो। हमारा आचरण आगम (आगे की सोच को ध्यान में रखते हुए) सम्मत हो जिनका आचरण होता है वे आगामी काल में निकट भविष्य में मुक्तिगामी हो सकते हैं। शिष्य ने गुरु से जिज्ञासा की हमारा जीवन कैसा हो? गुरु ने कहा-आने वाले इतिहास में लिखने जैसा हो।

हमें समझ लेना चाहिए कि अगर आप के बाद भी आपको स्मरण रहने योग्य बनना है तो 1. अच्छा सोचें, 2. अच्छा बोलें, 3. अच्छा आचरण करें। अच्छा सोचेगें तो मन का टेढ़ापन खत्म हो जाएगा। अच्छा बोलेंगे तो वचन का खारापन समाप्त हो जाएगा और अच्छा आचरण करेंगे तो व्यवहार का उतावलापन भी उतर जाएगा। हम धार्मिक जीवन जीना चाहते हैं तो काल के प्रभाव से प्रभावित नहीं होकर निजस्वभाव में आने के लिए त्रि-सूत्रीय मन्त्र काम में लें। अच्छा सोचें, अच्छा बोलें, अच्छा आचरण करें।

अजय टंकारावाला

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में आपकी सन्तानों को पढ़ाने का स्वर्णिम अवसर

टंकारा में श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में नये छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है।

- ❑ कक्षा 5, 6 तथा 7 में उत्तीर्ण छात्र जो शरीर और मस्तिष्क से पूर्ण स्वस्थ हो, को प्रवेश दिया जायेगा।
- ❑ गुरुकुल में माता-पिता तथा अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धावान्, धर्म, समाज तथा देश के प्रति अपने कर्तव्यधर्मो का निर्वाह करने में सक्षम छात्रों का निर्माण किया जाता है।
- ❑ विद्वान तथा चरित्रवान छात्रों के निर्माण में प्राचीन तथा नवीन शिक्षा का समन्वय है। संस्कृत व्याकरण, वेद, दर्शनशास्त्रादि के साथ-साथ ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़ाया जाता हैं। वर्तमान की शिक्षा के अनुरूप अंग्रेजी, गणित, भूगोल, विज्ञान आदि पढ़ाने के लिए योग्य अध्यापकों की व्यवस्था है। आधुनिक तकनीक से परिचित रखने के लिए कम्प्यूटर का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।
- ❑ विद्वता के साथ चरित्रवान बनाने के लिए अपनी सन्तानों को गुरुकुल में अवश्य पढ़ावें।

अधिक जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार अथवा मोबाइल द्वारा आचार्य रामदेव शास्त्री का सम्पर्क करें।

आवश्यकता है

टंकारा में श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय को गुरुकुल परम्परा में निष्ठावान अध्यापकों की आवश्यकता है:-

❑ कक्षा 6 से 10 तक सामान्य अंग्रेजी के साथ भूगोल, इतिहास आदि पढ़ाने में सक्ष्म हो। ❑ कक्षा 6 से 10 तक विज्ञान तथा गणित आदि पढ़ाने में सक्ष्म हो। ❑ गुरुकुल झज्जर के पाठ्यक्रमानुसार शास्त्री तथा उत्तर मध्यमा की कक्षाओं में संस्कृत व्याकरण, साहित्य, दर्शन तथा ऋषि दयानन्द जी के ग्रन्थ पढ़ाने में सक्ष्म हो। ❑ गुरुकुल के अन्य कार्यो को करने में रूचि रखता हो।

वेतनमान: योग्यतानुसार दिया जायेगा। आवास तथा भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से होगी। आवेदक अपना बायोडेटा पासपोर्ट साईज की फोटो के साथ 3 मई 2015 तक आवेदन भेज सकते है।

आचार्य रामदेव शास्त्री

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

डाक- टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात) पिन-363650,

मोबाइल-0991321448, E-mail:tankaratrust@gmail.com

स्वाहा शब्द की व्याख्या

❒ महात्मा प्रभुआश्रित जी

आज वही महात्मा प्रातः काल के समय एक बाग में सैर करते-करते एक बूटी के पास टकटकी लगाए बैठे थे कि कुछ आर्य सज्जनों की एक मण्डली आई-कई हैट लगाये, कई नंगे सिर, कई पगड़ी और टोपी पहने थे। वे आकर खड़े हो गए और महात्मा की इस कार्यवाही को देखने लगे कि यह क्या देख रहे हैं? कुछ देर बाद महात्मा की आँखों से पानी टपकने लगा और मुख से 'अहा' निकला। परन्तु खड़े हुए भद्र पुरुषों ने 'स्वाहा' समझा और तत्काल बोल उठे महाराज! आप पर यज्ञ की धुन इतनी सवार है कि न यहा अग्नि है, न कुण्ड है, न घी, न सामग्री, फिर भी आप 'स्वाहा' बोल रहे हैं। क्यों यहाँ भी हवन कर रहे हैं?

महात्मा मुस्करा दिये और कहा भाईयो! प्रभु का धन्यवाद है कि आपको भी मेरी तरह पागलपन है, आपको मेरी 'अहा' भी 'स्वाहा' प्रतीत हुई। आप धन्य हो! भला आप ही बतलाओ कि मनुष्य 'अहा' का शब्द कब कहता है?

लोग-जब कोई खुश होता है, किसी चीज को देखकर, सुनकर या पाकर, तब उसके मुख से-'अहा' स्वयमेव निकल पड़ता है।

महात्मा-और स्वाहा कब कहा जाता है?

लोग-जब अग्नि में आहुति दी जाती है।

महात्मा-तो क्या अग्नि में आहुति देने के अतिरिक्त कभी स्वाहा नहीं कहा जाता?

लोग-नहीं।

महात्मा-जरा चुप होकर शान्ति से विचार करो कि बिना अग्नि की आहुति के भी 'स्वाहा' बोला जाता है या नहीं?

सब चुप रह गए और विचार करने लगे, किन्तु किसी को कुछ स्मरण न आया।

अब महात्मा बोले भाईयो! आचमनमन्त्रों को ही दुहरा लो! अब सबके कान खड़े हो गये, कहा-महाराज! वहाँ तो तीन आचमनों में तीन बार स्वाहा कहते हैं, परन्तु हमारी तो मति ही मारी गई। प्रतिदिन करते हैं, पर अब याद ही नहीं आया। अब यहाँ पर एक संशय और भी बढ़ गया कि आचमन-मन्त्र तो पानी का घूँट पीने के लिए है, जिससे कण्ठ की कफ-निवृत्ति हो जाये, स्वाहा भी कहते हैं, तो यह कैसे आहुति बन गई? महाराज! अब आप ही समझाएंगे। हम तो और भी चक्कर में पड़ जाए।

महात्मा-यह आचमन केवल कफ निवृत्ति के लिए नहीं। इसमें बड़ा भारी रहस्य है। अच्छा बतलाओ कि अग्नि में हवि के स्वाहा करने से क्या परिणाम होता है?

सेठ दिलबागराय- हविष्य पदार्थ के गुण अग्नि के संग से सूक्ष्म होकर आकाश में दूर-दूर फैल जाते हैं और जहाँ-जहाँ जलवायु को शुद्ध करते हैं वहाँ-वहाँ पृथिवी पर रहने वाले प्राणियों को भी सुगन्ध और पुष्टि देते हैं, रोगों का नाश करते हैं।

महात्मा-ठीक कहा। तो जो हवि मनुष्य के अन्दर जाय, वह भी पिण्ड के अन्दर फैल जानी चाहिए।

सेठ-हाँ जी और फैल जाती है। जैसे हम जल पीते हैं, रोटी खाते हैं, वह सूक्ष्म होकर हमारे अंग-अंग में फैल जाती है और सबको शक्ति देती है।

महात्मा-जो चीज मनुष्य खाता है उसके कितने गुण शरीर में पैदा होते हैं?

सेठ- यह तो महाराज, कोई वैद्य बतलाएगा।

केशवदेव- जितने पदार्थ हम खाते हैं एक तो उनमें रंग होता है, दूसरे गन्ध आती है, तीसरे स्वाद होता है, चौथे गर्मी-सर्दी, तरी-खुश्की होती है। इन सबका असर होता है जिसका मल से, मूत्र से पता लगता है और वह ठोस भाग (स्थूल) मल बनकर बाहर निकलता है। जैसे साग खाने से मल हरे रंग का आता है, प्याज आदि खाने से मल में वैसी दुर्गन्धि आती है, मिर्च खाने से मूत्र में और शौच में समय गुदा में बहुत तेज जलन-सी होती है, ऐसे ही इसका सूक्ष्म भाग रूधिर में असर करता है जिससे गर्मी-सर्दी या वात, पित्त, कफ की अधिकता या न्यूनता का ज्ञान होता है। इससे अधिक मुझे भी कुछ ज्ञान नहीं, मैं साधारण वैद्य हूँ।

महात्मा- ठीक ऐसे ही जो हवि हम अन्दर देते हैं उसका असर भी हमारे शरीर में हो जाना चाहिए, स्थूल का प्रभाव स्थूल पर, सूक्ष्म का प्रभाव सूक्ष्म भागों पर। जब हम कहते हैं ''ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा'' तो इस जलरूपी हवि से हमारे अंग-अंग में सत्य, यश, शोभा और सम्पत्ति समा जानी चाहिए, फैल जानी चाहिए। एक आदमी जो हवनकुण्उ के पास बैठा है और हवि के जलने से उसे सुगन्ध नहीं आती, तो यही कहा जाता है कि उसकी नाक बन्द है। उसे सुगन्ध नहीं आती, चाहे वह नजदीक ही बैठा है। ऐसे ही जो मनुष्य अग्निहोत्र करता है और आचमन से ऐसा कहकर 'स्वाहा' पर अन्दर जल की हवि लेता है और वह हवि अपने गुणों को फैलाती है, हमारे मन में सत्य और आत्मा में यश, शरीर में शोभा और बुद्धि में ज्ञान (सम्पत्ति) उत्पन्न नहीं होता तो समझो कि सबके-सब ताले में बन्द हैं। खुशी और आनन्द तो तभी आता है अग्निहोत्री को, जब उसका अंग-अंग यज्ञ की हवि बन जाय। असली उद्देश्य तो आहुति का अपने अन्त-करण की पवित्रता और ऊँचाई का है बाहर की छवि से तो जलवायु पवित्र हो गए और ज्वाला-प्रकाश ऊँचा चढ़ गया। अपना अन्तर कोरा रहा तो फिर वही हाल हुआ कि दीपक ने दूसरों को प्रकाश दिया और खुद उसके अपने तेल अन्धेरा रहा।

कृष्ण-जल के लेने से सत्य किस तरह उत्पन्न हो गया, ऐसे अपने आप कल्पना कर लेनी है?

महात्मा- कल्पना तो करनी ही पड़ती है, परन्तु इस कल्पना शक्ति का तब तक कोई भी असर नहीं होता जब तक इसके साथ एकाग्रता और इच्छा शक्ति प्रबल न हो। कल्पना भी वहीं होती है जो यथार्थ में सम्भव हो, गलत कल्पना का नाम कल्पना नहीं है, वह विकल्प होता है। अदालतों के अन्दर जब अभियोक्ता (मुद्दई) या अभियुक्त (मुद्दलिया) को गवाहों पर किसी भी कारण से किसी एक पक्ष के षड्यन्त्र, चालबाजी, जोर या रोग से दूसरे पक्ष को विश्वास नहीं होता तो वह कह देता है कि जल का लोटा हाथ में लेकर यह कह दे तो बस उसी का कथन स्वीकार है, अर्थात् जल ही सत्य की सौगन्ध की एकमात्र जमानत या चिन्ह् है। परमात्मा और आत्मा के मिलने का साधन सात्य है और संसार की चीजों के मिलाप का साधन एक जल ही है। जो दो चीजें आपस में मिलेगी उनमें तो अवश्य आएगा।

असली अभिप्राय आचमन और अंगस्पर्श का तो यही है कि पवित्रता और स्वतन्त्रता प्राप्त हो। धन तो मनुष्य को दान के बदले में मिलता है, परन्तु स्वतन्त्रता तो कभी धन-दान से नहीं मिलेगी। पवित्रता से ही स्वतन्त्रता मिल सकती है। पवित्रता के लिए त्याग-वृत्ति की जरूरत है। यज्ञ तो बिना त्याग-वृत्ति के पूर्ण ही नहीं हो सकता। हवि, अन्न-धन का त्याग भी त्याग कहलाता है, पर यह अन्य भूतों, प्राणियों के साथ सम्बन्ध रखता है। वास्तविक त्याग तो त्यागमय वृत्ति में है जो आत्मा से सम्बन्धित है और इसी से स्वतन्त्रता मिलती है। होता का अर्थ है त्याग करनेवाला। त्याग वही कर सकता है जो स्वामी हो। दासों का त्याग उपहास होता है और अपने-आपको धोखा देना है। इसलिए यज्ञ करने वाले को स्वतन्त्र होने का यत्न करना चाहिए। परतन्त्रता में अग्निहोत्र करने का पूरा अधिकार नहीं हो सकता। स्वराज्यप्राप्ति के लिए आत्मसिद्धि श्रेष्ठ उपाय है। तीसरे आचमन-मन्त्र से जब मन में सत्य बस जाय तो पवित्रता आ जाती है, और अंग-स्पर्श का अन्ति मन्त्र यह शिक्षा देता है कि शरीर तुम्हारा है और पहले मन्त्रों में यही भाव है। उदाहरणार्थ-

'ओ वाङ्मआस्येऽस्तु' अर्थात् यह जबान, जिह्वा, वाणी, वाक्शक्ति मेरे मुख में रहनेवाली मेरी हो, मेरे अधिकार में हो, मेरा इस पर पूरा काबू हो। आज संसार इस जिह्वा के उलटा अधीन हुआ है। एक तोले की जीभ तेरह नाच नचाती है। जरा किसी ने प्रतिकूल बात की, मेरी जबान आपे से बाहर निकल पड़ी! मैं इसे नहीं रोक सका और परिणाम यह हुआ कि परस्पर कलह हो गया और मुकद्माबाजी हुई, मुझे गवाओं, वकीलों की लल्लो-चप्पो, प्रार्थना, खुशामद और अधीनता करनी पड़ी। किसी अच्छी चीज को देखा, मुँह में पानी भर आया। जबान ने बाहर निकलकर भीख माँगी या चापलूसी की, या बेईमानी का पाप कराया। यदि यह वाणी मेरे काबू में हो तो मैं इसका स्वामी हूँ। यही स्वतन्त्रता है। फिर कहा **'ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु'** अर्थात मेरी नासिका में चलनेवाला प्राण मेरे अधीन हो, मुझे अपने प्राण पर पूरा वश हो। अंगस्पर्श का मतलब तो यही था, पर प्राण मेरे वश से बाहर है। मैं इसे एक मिनट भी नहीं रोक सकता, मेरा दम निकलता है। जिन योगियों ने अपने प्राण को वश में किया, उन्होंने ही अपनी वासनाओं को वश में किया, वही मुक्त हुए। इस प्राण के काबू न कर सकने से ही तो मेरी सब इन्द्रियों की मति उलटी है।

फिर कहा **'ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु'** अर्थात् मेरी आँख के गोलक में रहने वाली दर्शनशक्ति मेरी हो जाय, लेकिन मैं अपनी आँख को पाँच मिनट भी नहीं मूँद सकता। जरा झंकार हुई, झट खुल जाती है। जरा कोई सुन्दर वस्तु देखी, उसी की ही बन गई, मतवाली हो गई। इसी के बाहर निकलने से तो इसकी शक्ति को कमजोर कर दिया, और अब देखने में भी ऐनक की दास हो गई। जिसका आँख पर वश न रहा, समझो उसकी पवित्रता तो भाग गई।

आगे है **'ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु'** अर्थात् कान सबसे बड़ा देवता है। इस पर नियन्त्रण करना कठिन है। आज संसार में वैर-विरोध का बड़ा कारण कान और जिह्वा है, जिह्वा निन्दा, चुगली करती है और कान निन्दा सुनते हैं। ये आपस में एकता न करें तो आज लड़ाई बन्द हो जाय। कान पर काबू ही नहीं। दिन रात दूसरे की निन्दा और अपनी स्तुति सुनकर खुख हो रहा है। अपनी निन्दा और दूसरे की स्तुति सुनकर जल-भुन रहा है-

''चश्म बन्दो गोश बन्दो लब बबन्द।
गर न बीनी सिरेहक बर मन बखन्द।''

किसी महात्मा ने बड़ा सुन्दर कहा है कि आँख, कान, मुख बन्द करो तो फिर प्रभु की गुप्त ज्योति के तुम्हें दर्शन होंगे। इस अंगस्पर्श का यही उद्देश्य है कि मेरे कान मेरे वश में हों, मेरे हो जायँ।

''ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु'' अर्थात् मेरे बाहु का बल मेरा हो जाय, अर्थात् मुझे जो आन्तरिक शत्रु सताते हैं, मेरा बल उन पर व्यय हो और दीन-दु:खियो की रक्षा कर सकूँ। अगर मेरी बाहु का बल किसी दूसरे के अधीन है तो जहाँ जाएगा वहीं लड़ाएगा। बल शब्द 'ब'+'ल' से बना है। 'ब' से 'बुराई', 'ल' से 'लय'। जो बल बुराई को लय कर सकने वाला हो, नाश करने वाला हो, वही बल है, और जो बुराई को फैलाने वाला हो वह क्या बल कहलाएगा?

''ओम् ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु'' अर्थात् मेरी टाँगो का ओज मेरा हो। ओज वह वस्तु है जिससे सामने खड़े व्यक्ति पर छाप पड़ जाती है, वह अधीन बन जाता है।

अगर यज्ञ करने वाला साधक काल्पनिक तौर पर अंगस्पर्श न करे तो अपने संकल्पों से जल द्वारा इन अंगों को वह सम्मोहित (उमेउमतपेमक) कर दे। जब प्रतिदिन ऐसा अभ्यास हो तो क्यों न फिर बल-शक्ति का विकास हो! पर शोक की बात है कि हमारी सब क्रियाएं अज्ञान के कारण विफल सी रहती हैं। परमात्मा करे हम सबमें ऐसी श्रद्धा उत्पन्न हो कि हम अपने-आपको यज्ञक्रिया से पवित्र और स्वतन्त्र बना सकें।

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, राजस्थान राज्य के अलवर जिले में साबी नदी के किनारे स्थित एक रमणीक संस्था है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अत: आपसे निवेदन है कि आप गुरुकुल में अधिक से अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धांतो के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

गुरुकुल की विशेषताएं

1. कक्षा 6 से 9 तक तथा 11वीं व शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रारम्भ।
2. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त।
3. विस्तृत भू-भाग एवं आधुनिक सुविधायुक्त विशाल भवन।
4. पोष्टिक भोजन।
5. कम्प्यूटर शिक्षा।
6. योग्य एवं अनुभवी आचार्यगण।
7. शान्त सुरम्य एवं एकान्त वातावरण।
8. तरण ताल।
9. 24 घंटे बिजली हेतु सौर उर्जा संयंत्र।

सम्पर्क करें:-

आचार्य प्रेम लता, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया
जिला-अलवर, राजस्थान-301401
फोन न. 01495-270503, मो. 0941674708

ऋतुचर्या

❒ उदयनाचार्य

ओ३म् वसन्तेनऽऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः।
रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्र वयो दधुः ।।स्वाहा।। (यजु. 29.23)

भावार्थ- जो वसन्त ऋतु के समान अपने जीवन में ज्ञान-विज्ञान के पुष्पों को विकसित कर सदा नव-नूतनत्व को, सद्गुणों को धारण कर दिव्यता को प्राप्त कर लेते हैं और अपने ही अन्तरात्मा के चिन्तन में वसते हैं अर्थात् अपने जीवन में वसन्त ऋतु को लाते हैं, ऐसे वसु ब्रह्मचारी व प्रथम कक्ष के विद्वान लोग तीनों कालों में प्रशंसित होते हैं। अपने पराक्रम एवं तेज से जीवात्मा में ज्ञानरूपी हवि तथा उत्कृष्ट जीवन को धारण करते हैं।

ओ३म् ग्रीष्मेण ऋतुना देवा रूद्राः पञ्चदशे स्तुताः।
बृहता यशसा बल हविरिन्द्र वयो दधुः।। स्वाहा।। (यजु. 21.24)

भावार्थ- जो ग्रीष्म ऋतु के सूर्यसदृश अपने प्रचण्ड ज्ञान के प्रताप से आन्तरिक मलों को भस्म कर देते हैं और ज्ञान, शान्ति एवं आनन्दरूपी रस को ग्रहण कर लेते हैं अर्थात् अपने जीवन में ग्रीष्म ऋतु को लाते हैं, ऐसे दिव्यता के प्राप्त किये हुए रूद्रगण अर्थात् अपने आसुरीभावों को सन्तप्त करने वाले रूद्र ब्रह्मचारी व मध्यम कक्ष के विद्वान लोग पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पांच कर्मेन्द्रियों एवं पांच प्राणों को स्वाधीन करने में प्रशस्त होते हैं तथा महान यश, बल, जीवन रूपी हवियों (ग्रहण करने योग्यों) को अपने में धारण करते हैं।

ओ३म् वर्षाभिर्ऋतुनादित्या स्तोमे सप्तदशे स्तुताः।
वैरूपेण विशौजसा हविरिन्द्र वयो दधुः।।स्वाहा।। (यजु. 29.25)

भावार्थ-जो वर्षा ऋतु के समान सच्चित ज्ञान को सभी मनुष्यों में बरसाते हैं और उनके अज्ञान को, कष्टों को दूर कर आनन्दित करते हैं अर्थात् जो अपने में वर्षा ऋतु को लाते हैं, ऐसे आदित्य देव अर्थात् आदित्य ब्रह्मचारी व उत्तम विद्वज्जन स्तुति करने योग्य सूक्ष्मशरीर (5 ज्ञानेन्द्रिय+5 कर्मेन्द्रिय+5 प्राण+मन+बुद्धि) में प्रशस्त होते हैं तथा विभिन्न रूपवाले व स्वभाव वाले प्रजा से एवं ओज से अपने में श्रेष्ठ जीवन को धारण करते हैं।

ओ३म् शारदेन 'ऋतुना' देवाऽएकविंशऽऋभव स्तुताः।
वैराजेन श्रिया श्रियं हविरिन्द्र वयो दधुः।। स्वाहा।। (यजु. 29.26)

भावार्थ- जैसे शरद् ऋतु वर्षा ऋतु के मेघों को छिन्न-भिन्न कर आकाशादि को निर्मल बनाता है, जल को शुद्ध करता, अन्न और फलों की वृद्धि करता है, वैसे ही ऋभव देव अर्थात् ज्ञानज्योति से प्रदीप अन्तःकरणवाले (ऋतेन भान्ति, ऋतेन भवन्तीति वा-निरूक्त 11.16) मेधावी जन अथवा ऋतु में ही रमने वाले विद्वान 29 तत्वों (संवत्सर के 12 मास, 6 ऋतु एवं 3 लोक-द्र. ऐ. ब्रा. 1.30, श. ब्रा. 1.3.4.11) को जानकर लोगों में व्याप्त मेघरूपी आसुरीभावों को विनष्ट कर उनमें ज्ञानज्योति को प्रदीप्त कर उनके अन्तःकरण को पवित्र बनाते हैं और उन्हें सुख शान्ति से परिपूर्ण कर देते हैं। इस प्रकार अपने जीवन में शरद् ऋतु को लो वाले वे विद्वान जनता में अत्यन्त प्रशंसित होते हैं तथा विशेषरूप से प्रकाशित ऐश्वर्य को एवं ग्रहण करने योग्य दीर्घ जीवन को प्राप्त होते हैं।

ओ३म् हेमन्तेनऽऋतुना देवास्त्रिणवे मरूत स्तुताः।
बलेन शक्करीः सहो हविरिन्द्र क्यो दधुः।। स्वाहा।।(यजु. 29.27)

भावार्थ-हेमन्त ऋतु अपने तीव्र शीत से प्राणियों को कष्ट देता है और जल-प्रवाह को संकुचित करता है, वैसे ही मरूद देव अर्थात् ऋत्विग्गण व याज्ञिक लोग (मरूत् इति ऋत्विङ्.नाम(नि. 2.19) अपनी और यजमानों की दुर्भावनाओं के प्रति अत्यन्त कठोरता दिखाते हैं और अपने जीवन में हेमन्त ऋतु को प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार वे (त्रिवण) धर्म, अर्थ, कामों में उत्तम गतिवाले होते हुए या ज्ञान, कर्म, उपासनाओं में स्तुत्य होते हुए लोक में प्रसिद्धि को पाते हैं। तत्परिणामतः वे ग्रहण करने योग्य बल, शक्ति सामर्थ्य, सहनशीलता को धारण कर सार्थक जीवन वाले होते हैं।

ओ३म् शैशिरेणऽऋतुना देवास्त्रयस्त्रिंशेऽमृताऽस्तुताः।
सत्येन रेवतीः क्षत्रं हविरिन्द्र वयो दधुः।। स्वाहा।। (यजु. 29.28)

भावार्थ- जैसे शिविर ऋतु वृक्षों के पत्तों को गिरा कर नये पत्तों को उत्पन्न करने के निमित्त वृक्षों में नये रस का सिंचन करता है, वैसे ही अमृत देव अर्थात् विषय-वासनाओं के पीछे न करने वाले विद्वान वा रोगों से आक्रान्त न होने वाले मनीषी भी अपने सभी बन्धनों को शिथिल कर अपने में अमरत्व को प्राप्त करने में समर्थ रस का, शक्ति का सिंचन कर अपने जीवन में शिविर ऋतु को लाते हैं। इस प्रकार वे अपने मस्तिष्करूप द्युलोक, हृदयरूप अन्तरिक्षलोक एवं अवशिष्ट शरीररूप पृथिवीलोक में ग्यारह-ग्यारह देवों (दिव्यगुणों) को धारण कर अपने शरीर को तैंतीस देवों के निवास से देवपुरी बना लेते हैं। जिससे वे अत्यन्त स्तुत्य बनते हैं। वे सत्य के मार्ग से ही धनाद्यैष्चर्यो का प्राप्त करते और आत्मिक बल, अन्न एवं उत्कृष्ट जीवन को भी प्राप्त करते हैं।

ओ३म् ऋतवस्तऽऋतुथा पर्व शमितारो विऽशासतु।
संवत्सरस्य तेजसा शमीभिः शम्यन्तु त्वा।। स्वाहा।। (यजु. 23.40)

भावार्थ-गत मन्त्रों में वर्णित (ऋतुथा) ऋतुओं के अनुकूल आचार, विचार और व्यवहार करने से वे ऋतुवें और ऋतुओं के पर्व (सन्धिकाल) दिव्यता एवं स्वस्थता के अभिलाषियों को शान्ति को प्रदान करनेवाली होकर मार्गदर्शक बनती हैं। अभीष्ट कामना को प्रदान करने में समर्थ संवत्सर की तेजस्विता से एवं ऋत्वनुकूल कर्मो (शमी कर्माणि-निघ. 2.9., निरु 11.16) से तुझे सुख और शान्ति प्राप्त हों।

महर्षि दयानन्द उवाच

मनुष्यों को चाहिए कि शुद्ध पदार्थो का ऋतु-ऋतु में होम किया करें, जिससे वह द्रव्य सूक्ष्म हो और क्रम से अग्नि, सूर्य तथा मेघ को प्राप्त होके वर्षो के द्वारा सब का उपकारी होवें। (यजु. 29.35)

जो मनुष्य सब ऋतुओं में समय के अनुसार आहार-विहार से युक्त होके विद्या, योगाभ्यास और सत्संगों का अच्छे प्रकार सेवन करते हैं, वे सब ऋतुओं में सुख भोगते हैं और इनको कोई चोर आदि (रोग) भी पीड़ा नहीं दे सकता। (यजु. 10.14)

मनुष्यों को चाहिए कि धर्मात्माओं के मार्ग से चलते हुए शारीरिक, वाचिक और मानसिक तीनों प्रकार के सुखों को प्राप्त होवें और जिसमें कामना पूरी हो, वैसा प्रयन्न करें। जैसे वसंतादि ऋतु अपने क्रम से वर्तते हुए अपने-अपने चिन्ह प्राप्त करते हैं, वैसे ऋतुओं के अनुकूल व्यवहार करके आनन्द को प्राप्त होवें। (यजु. 13.39)

जो मनुष्य युक्त आहार-विहार करने वाले जितेन्द्रिय होते हैं, वे

सब ऋतुओं में पाँचों इन्द्रियों से सुख को प्राप्त होते हैं। (ऋ 2.13.10)

मनुष्य को योग्य है कि ऋतुओं के अनुकूल क्रिया से अग्नि, जल और अन्न का सेवन करके राज्य और पृथिवी की सदैव रक्षा करें, जिससे सब सुख को प्राप्त होवें। (यजु.13.43)

इस संसार में मनुष्य का जन्म पाके स्त्री तथा पुरुष विद्वान होकर जिन ब्रह्मचर्य-सेवन, विद्या और अच्छी शिक्षा के ग्रहण आदि शुभ गुण कर्मों में आप प्रवृत्त होकर जिन अन्य लोगों को प्रवृत्त करें, वे उनमें प्रवृत्त होकर परमेश्वर से लेकर पृथिवीपर्यन्त पदार्थों के यथार्थ विज्ञान से उपयोग ग्रहण करके सब ऋतु में आप सुखी रहें और अन्यों को सुखी रखें।

<u>वसंत ऋतु:</u> जब वसंत ऋतु आता है, तब पक्षी भी कोमल मधुर-मधुर शब्द बोलते और अन्य सब प्राणी आनन्दित होते हैं। (यजु.13.26) जब वसन्त ऋतु आता है, तब पुष्प आदि के सुगन्धों से युक्त वायु आदि पदार्थ होते हैं, उस ऋतु में घूमना-डोलना पथ्य होता है, ऐसा निश्चित जानना चाहिए। (यजु. 13.27)

हे मनुष्यों! तुम लोब वसन्त ऋतु को प्राप्त होकर जिस प्रकार के पदार्थों के होम से वनस्पति आदि कोमल गुणयुक्त हों, ऐसे यज्ञ का अनुष्ठान करो और इस प्रकार वसन्त ऋतु के सुख को सब जने तुम लोग प्राप्त होओ। (यजु. 13.29)

जो मनुष्य लोग रहने के हेतु दिव्य पृथिवी आदि लोकों वा विद्वानों की वसन्त में संगति करें, वे वसन्त संबन्धी सुख को प्राप्त होवें। (यजु. 21.23)

राजादि मनुष्यों को चाहिए कि वसन्त ऋतु में पहिले घोड़ों को, शिक्षा दें और रथियों को रथों पर नियुक्त करके शत्रुओं को जीतने के लिए यात्रा करें। (यजु. 13.36)

<u>ग्रीष्म ऋतु:</u> मनुष्य वसन्त और ग्रीष्म ऋतु के बीच जलाशयस्थ शीतल स्थान का सेवन करें, जिससे गर्मी से दुःखित न हों और जिस यज्ञ से वर्षा भी ठीक-ठीक हो और प्रजा आनन्दित हो, उसका सेवन करो (यजु. 13.30)

वर्षा ऋतु: हवन और सूर्य रूपादि अग्नि के ताप से सब गुणों से युक्त अन्नादि से संसार की स्थिति करने वाली वर्षा होती है। उस वर्षा से सब औषधि आदि उत्तम पदार्थ युक्त पृथिवी होती और सूर्यरूप अग्नि से ही प्राणियों के विश्राम के लिए रात्रि होती है। (यजु. 23.12)

सब मनुष्यों को चाहिए कि विद्वानों के समान वर्षा ऋतु में वह सामग्री ग्रहण करें, जिससे सब सुख होवें। (यजु. 14.15)

<u>शरद् ऋतु:</u> हे मनुष्यों! जो शरद् ऋतु में उपयोगी पदार्थ हैं, उनको यथायोग्य शुद्ध करके सेवन करो। (यजु. 14.16)

जो लोग अच्छे पथ्य करने हारे शरद् ऋतु में रोगरहित होते हैं, वे लक्ष्मी (ऐश्वर्य) को प्राप्त होते हैं। (यजु. 29.26)

<u>हेमन्त ऋतु:</u> विद्वानों को योग्य है कि यथायोग्य सुख के लिए हेमन्त ऋतु में पदार्थों का सेवन करें और वैसे ही दूसरों को भी सेवन करावें। (यजु. 14.27) जो लोग सब रसों को पकाने हारे हेमन्त ऋतु में यथायोग्य व्यवहार करते हैं, वे अत्यन्त बलवान् होते हैं। (यजु. 21.27)

दिनचर्या: प्रातः समय की बेला सोते हुए हम लोगों की आयु को धीरे-धीरे अर्थात् दिन-दिन काटती है, ऐसा जानकर और आलस्य छोड़कर हम लोगों को रात्रि के चौथे प्रहर में जाग के विद्या, धर्म और परोपकार आदि व्यवहार में नित्य उचित वर्ताव रखना चाहिए। (ऋ 1.92.10) जो मनुष्य रात्रि के चौथे प्रहर में जागकर शयन पर्यन्त व्यर्थ समय को नहीं जाने देते वे सुखी होते हैं, अन्य नहीं। (ऋ 01.113.5) जो मनुष्य उषा से पहले शयन से उठ आवश्यक कर्म करके परमेश्वर का ध्यान करते हैं, वे बुद्धिमान् और धार्मिक होते हैं।

हे स्त्री-पुरुषों! आप लोग रात्रि के चौथे प्रहर में उठ और आवश्यक कृत्य करे वाहन वा पैरों से सूर्योदय से पहले शुद्ध वायु देश में भ्रमण करें तो आप लोगों को रोग कभी न प्राप्त होवें। (ऋ 4.14.4)

दिन और रात्रि के सन्धि में अर्थात् सूर्योदय और अस्त के समय में परमेश्वर का ध्यान और अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए। (सत्यार्थ. समु-4)

जीवन की सफलता: हे मनुष्यों! तुम लोगों को चाहिए कि इस जगत् में मनुष्य का शरीर धारण कर विद्या, उत्तम शिक्षा, अच्छा स्वभाव, धर्म, योगाभ्यास और विज्ञान का सम्यक ग्रहण करके मुक्ति-सुख के लिए प्रयत्न करो, यही मनुष्य जीवन की सफलता है ऐसा जानो। (यजु. 34.22)

गौ-दान : महा-दान

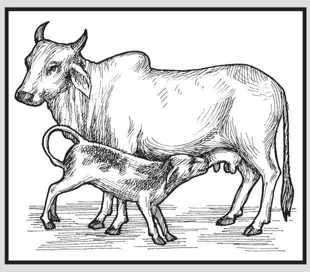

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि <u>**श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।</u>

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

प्रतीकोपासना पर विचार

❒ श्रीहरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक

आर्यसमाजी 'ओम' को मानते हैं। बंगाल के लोग दुर्गा काली की मूर्ति बना कर पूजा करते हैं। अमीर लोग लक्ष्मी की और विद्यार्थी बालक-बालिका सरस्वती की तथा मुम्बई के लोग श्री गणेश की मूर्ति बनाकर उनकी पूजापाठ करते हैं।

कितने स्थान ऐसे हैं जहाँ वैष्णव देवी तथा शिव आदि मूर्त्तियों की पूजा करने जाते और मन्नत मानते रहते हैं। साई बाबा तो नहीं रहे पर उनकी मूर्ति पर सोने का मुकुट और विभिन्न प्रकार अलंकार तथा नगदी भेंट दिया जाता है। ऐसे करोड़ों का दान उनकी मूर्ति पर नौछार किया जाता है। यदि साई बाबा रहते तो सोने का मुकुट आदि कभी स्वीकार नहीं करते। तिरूपति मंदिर देव की मूर्ति पर सबसे अधिक अमीर लोग दान देते हैं।

जो लोग ऋषि दयानन्द की जीवनी और उनके द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' को अध्ययन कर लिये हैं और जो निःश्पक्ष होकर धर्म की वास्तविकता को समझ गये हैं, वे यज्ञ और सन्ध्योपसना के अलावा मूर्ति पूजा कभी नहीं करते, क्योंकि ईश्वरीय दैवी शक्तियों की स्त्री अथवा पुरुष आकार में मूर्त्तियाँ नहीं बन सकती, जो बनाई जाती है वह पुराण के अनुसार काल्पनिक हैं। क्या कोई वायु शक्ति, प्राणशक्ति, श्रुति शक्ति, वाणी शक्ति, दृष्टाशक्ति चैतन्य आत्मा और सर्वदृष्टा सर्वशक्तिमान परमात्मा की मूर्ति बना सकता है?

ब्राह्माणवादियों पुजारियों ने 2500 वर्ष पूर्व बौद्ध और जैन काल से 'वैदिक शास्त्र ऋषि पतंजलि के योगाशास्त्र के अनुसार एकेश्वरोपासना के स्थान पर मूर्तिपूजा और मंदिर निर्माण की ऐसी प्रथा ऐसा संस्कार सबके मन में डाल दिया कि आज यदि आप किसी मूर्तिपूजक से कहें कि मूर्तिपूजा न करके सामग्रियों से यज्ञ का आयोजन की जिये तो वह कभी नहीं कर सकता। जबकि सन् 712 ई. में मुहम्मद कासिम ने देवल के मन्दिर की मूत्तियों को तोड़ डाला। महमदगजनी 1008 ई. में मथुरा को लूटा फिर प्रसिद्ध धार्मिक राजधानी सोमनाथ के मन्दिर को तोड़कर शिवादि मूर्तियों को नष्टकर अपारधनों को लूटा। मु. गोरी आदि मुगलो ने भारत के अनेक मंदिरों और देवी-देवताओं की मूर्तियों को छिल-भिन्न कर दिया, किन्तु वे मूर्तियां न कुछ कर सकी, न मूर्तियों के पूजारी और उनके भक्तजन ही कुछ कर सके। विदेशी मुसलमानों ने आराम से (ताजमहल बनवा कर) 700 वर्ष भारत में राज्य किया। इतिहास साक्षी है इतना सब कुछ होते हुए आज भी सबका विश्वास मूर्तियों पर टीका हुआ है।

और जहां तक श्री राम और योगेश्वर श्रीकृष्ण का प्रश्न है तो ऐतिहासिक होने से उनका चिन्ह् बना सकते हैं। पर उनके चिन्ह की नहीं चरित्र का उनके रामायण और गीतापदेशों को अपनाना चाहिए, यही उन महापुरुषों की सच्ची पूजा है। उन्होंने कभी नहीं कहा कि मूर्तियों की पूजा करनी चाहिए, वे लोग अग्निहोत्र यज्ञ ही किया करते थे) वे ईश्वर नहीं थे, वे महामानव थे, तभी तो उनका जन्म ओर मृत्यु वह तो अजन्मा है।

देखिये मनुष्य की बनाई हुई-पत्थर मिट्टी और सोने-चाँदी मूत्तियाँ अचेतन होने से न वे खा स्व सकती न बोल सकती और न दुग्ध आदि भोजन कर सकती है। यदि हम पीतल को सोना समझ लें, तो क्या वह सोना हो सकता है? जो जैसा है उसे वैसा ही देखना और समझना विद्या है, मिथ्या विश्वास कभी फलदायक नहीं होता। जितने लोग मन्नत करते हैं क्या सभी की मनोकामना पूर्ण होती है? ऐसा कभी नहीं हो सकता। (सोनिया गाँधी यदि अमेरिका न गई होती तो उनका रोग ठीक न हो पाता)। कितने लोग सन्तान प्राप्ति के लिए, मन्नत करते-करते वृद्ध-निरास हो गये, किन्तु सन्तान प्राप्त नहीं हुआ। (कितने लोगों को वैज्ञानिक तरीके से बेवी को पैदा करना पड़ा) परन्तु बहुत से लोगों का आत्मविश्वास इतना प्रबल होता है कि वे सफल हो जाते हैं। मूर्ति कुछ नहीं करती (उसके माध्यम से) अटल आत्मविश्वास की शक्ति से ही कविषय लोगों को कुछ लाभ पहुंच जाता है, मन्नत करने वाले समझते हैं कि अमुक देव अथवा देवी कृपा से मेरा बालक बच गया, मुझे नौकरी मिल गई, हमें संतान प्राप्त हो गया, यह सब सफलता 'समय परिस्थिति तथा प्रयन्त से होता है। अतः बिना कर्म चेष्टा के कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होता। यदि किसी को रोग हो जाय और चिकित्सा न किया जाए तो क्या किसी की दुआ अथवा मन्नत से रोग ठीक हो सकता है? कभी नहीं। यदि मन्नत अथवा तीर्थ करने से रोग ठीक हो जाता तो कोई सुगर, हाईपेसर स्वास रोग, कोलोस्ट्रोल, वातरोग, ठहुना, कमर दर्द और विकलांग वाले रोगी, रोगो से पीड़ित न होते। तब एक से एक डाक्टरों के यहाँ (अथवा चिकित्सा के लिए विदेशों में) किसी को जाना नहीं पड़ता।

प्रश्न-आप कहते हैं ध्यान करने को मन को सर्वेचिन्ताओं से हटाकर (हृदय अथवा मुकटी में) एक बिन्दु पर ठहराने को तो बिना किसी प्रतीक माध्यम के मन कैसे ठहर सकता है? और जब ईश्वर निराकर है, उसका कोई आकार है ही नहीं तो उसके होने का ज्ञान क्यों करें। जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं उसके प्रति कैसे विश्वास उत्पन्न हो सकता है? अतः विनाश शक्ति आधार के संसार का कोई काम नहीं हो सकता, विज्ञान भी बिना आधार कणों की शक्ति के न दूर दर्शन, न कम्प्यूटर और न मोबाइल का काम सिद्ध कर सकता था। इसलिए ईश्वर का ध्यान हो या और कुछ जैसे बिना सीढ़ी के पकड़े ऊपर कोई नहीं उठ सकता वैसे ही बिना आधार माध्यम के भला कैसे कोई योगाभ्यासी ईश्वर के प्रतिध्यान में तरक्की करके समाधितक पहुंच सकता है?

उत्तर-ईश्वर को निराकार इसलिए कहा गया है कि उसका कोई स्थूल आकार नहीं है। उपनिषद् के ऋषि और वेद के अनुसार ईश्वर आत्मा से भी सूक्ष्म होने से उसे प्राण से भी सूक्ष्म प्रकाशस्वरूप सर्वशक्तिमान कहा गया है।

'दिव्योऽमूर्तः पुरुषः सवाहयभ्यन्तरो हाजः। अ प्राणोहयमनाः शुभ्रोक्षरात्परतः परः॥ (मु.पुत्र 2.1.24) वह प्रकाश स्वरूप परमात्मा निश्चय ही मूर्ति से रहित सबमें व्यापक है। वह बाहर भीतर विद्यमान है। अजन्मा है। पंचतत्वों से बने प्राण व मन से रहित शुद्ध है। वह नाशरहित, कारण प्रकृति से भी सूक्ष्म और जीवात्मा से भी सूक्ष्म परमात्मा है।

'यमेरिरे भृगवोविश्ववेदसं नाभा पृथिवा भुवनस्य मज्मना।
अग्निं तंगीर्भिर्हिनुहि स्व आ दये य एको वस्वो वरूणो न राजति॥

(ऋ 1.143.4)

हे मनुष्यों! जो विद्वानों के द्वारा जानने योग्य, सर्वव्यापक, प्रशंसायोग्य, सच्चिदानन्द आदि लक्षणों वाला सर्वशक्तिमान, अनुपम, अतिसूक्ष्म स्वयं प्रकाश स्वरूप और अन्तर्यामी पर में श्वर है, उसे योगांगो के अनुष्ठान की सिद्धि के द्वारा तुम अपने अन्दर जानों।

चेतन दिखता नहीं है और यह भौतिक प्रकाश जैसा भी नहीं है

पर उसी चैतन्य (प्रकाश) से ज्ञान की उपलब्धी, सोच-विचार सुख, दु:ख का बोध एवं इन्द्रियों द्वार मन उसके माध्यम मे सारे कार्य को सम्पन्न करता है।

ईश्वर ने हमारे हृदय को बहुत महत्वपूर्ण अंग बनाया है, हम तभी तक जीवित है जबतक आयु के अनुसार मौलिक प्राण द्वारा यह क्रियाशील है। मोटे तौर पर इसके दो भाग होते हैं। वायें भाग में हृदय से शुद्ध रक्त बनता है और वह धर्मनियों द्वारा शरीर के हर हिस्से में पहुंचताता है। दहिने भाग के फेफड़े में पूरे शरीर का अशुद्ध रक्त (अर्थात् कार्बन डाईऑक्साइड युक्त)शिराओं द्वारा पहुंचाता है जिसे वायें भाग में भेजकर शुद्ध करता है अर्थात् ऑक्सीजन ग्रहण करके, कार्बन डाइऑक्साइड बाहर निकाल देता है।

सारांश यह है कि हृदय की हरकत भी उस महान विज्ञान स्वरूप ईश्वर की देन है, हृदय और फेफड़े का अनेक कार्य है-प्राण वायु ऑक्सीजन द्वारा अशुद्ध रक्त को शोधन कर अपान (का बर्न) वायु को बाहर निकाल देना तथा सारे शरीर में शुद्ध रक्त का संचार करना, यह दोनों हृदय और फेफड़े की मूल क्रिया है।

जैसे आत्मशक्ति शरीर में मौजूद है वैसे ही परमात्मा की शक्ति प्रकृति में विद्यमान है। प्रकृति सत्, रज, तम कणों से युक्त है। यही सब कण नियमानुसार संयुक्त होकर बुद्धिपूर्वक पंचतत्व एवं सूर्य चन्द्रादि की रचना की है। अत: विज्ञान संगत सर्वश्रेष्ठ मानव से लेकर पंचतल आदि की रचनाओं को देखकर ही ईश्वर होने का ज्ञान प्रत्यक्ष हो जाता है। क्योंकि प्रकृति जड़ है उससे उत्पन्न जितने कण हैं सब जड़ हैं, ये सृष्टि रचने की सामग्री है। कुम्हार रूपी निर्मित्त कारण ईश्वर है, चाक, नियम है और मिट्टी अर्थात् उपदानकारण परमाणु हैं जिनसे अनेक प्रकार के सृष्टि रूपी बर्तन बन रहे हैं। जब हमें ईश्वर अस्तित्व का ज्ञान हो गया तो उसके प्रति विश्वास भी हो जाता है। उसका और आत्मा का साक्षात्कार हमें तभी हो सकता है जब अपने एवं अपने मन को श्रद्धापूर्वक प्रेम से उसे प्राणों का प्राण 'प्राणायाम' द्वारा बोध करते हुए ध्यान को एक किया जाता है। जबतक चंचलमन स्थिर नहीं होता तब तक उस अपरिवर्तन शील, सर्वव्यापक, पूर्ण प्रकाश स्वरूप परमात्मा को हम देख नहीं सकते। परमेश्वर सर्वदृष्टा है, उसका गुण, क्रिया स्वभाव सब पवित्र है (वह प्राण के समान सबके हृदय में विद्यमान है) उससे सर्वज्ञता का भी गुण है तभी तो मानव में वेद द्वारा नैमित्कि ज्ञान एवं सोच विचार के लिए मस्तिष्क निर्माण कर दिया। वह सत्य है उसका नियम भी सत्य है। जो जैसा है वह उसी रूप में प्रकट होता है। सृष्टि बिना परिवर्तन के नहीं होता, उसका नियम भी सत्य है। जो जैसा है वह उसी रूप में प्रकट होता है। सृष्टि बिना परिवर्तन के नहीं होता उसका भी एक खास नियम है। मृत्यु के बाद जन्म और जन्म के पश्चात् या तो कोई जुबा हो रहा है या तो वृद्ध। जैसे नीम के वीज से जामुन कभी उत्पन्न नहीं हो सकता, वैसे ही बन्दर, बन मानुष, गोरिला से मनुष्य न कभी हुआ न हो सकता है।

मनुष्य कर्म करने न करने और विपरीत करने में स्वतन्त्र होता है, पर फल भोगने में परतन्त्र है। मनुष्य पाप करे या पुण्य, धर्म करे या अधर्म, न्यायकारी ईश्वर किसी का हाथ नहीं पकड़ता। उसका नियम पहले से बना हुआ है, जो जैसा करेगा उसका फल कभी न कभी किसी न किसी रूप में मिलेगा। अवश्य

प्राण से सूक्ष्म मन, मन से सूक्ष्म मेघा-बुद्धि और बुद्धि से सूक्ष्म आत्मा है। जबतक शरीर जीवित है तब तक मस्तिष्क के सम्बन्ध से आत्मा की चैतन्यता, बुद्धि और मन तथा इन्द्रियों के गुण प्रकट हो रहे हैं और जब आत्मा शरीर छोड़ देता है तब उसके सारे गुण उसमें लीन हो जाते हैं और तब वह ईश्वरीय नियमाधीन हो जाता है। पुन: जब उस आत्मशक्ति का प्राण के माध्यम से गर्भ से सम्बन्ध हो जाता है तब उस सूक्ष्म भ्रूण में हरकत आरम्भ होने से उसके एक-एक करके क्रमश: अंग बनने लगते हैं। यह सब लिखने का तात्पर्य यह है कि सूक्ष्म तत्वों से ही सारे बड़े-बड़े कार्य सम्पन्न होते हैं। मन भी प्रतीक है पर वह दिखता नहीं है। चंचल है। सर्वत्र विद्यमान परमाणुओं के तरंग दिखते नहीं हैं, पर वैज्ञानिकों ने अपने साधन यन्त्र द्वारा देश-विदेश से उसके माध्यम से वार्त्तालाप करवा रहा है। उसी प्रकार बिना साधना के हम प्राण के समान उस प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकते। सीढ़ी अष्टांग योग की होती है जिसे पकड़कर धारणा, ध्यान, समाधि से उस ज्योतिमय परमात्मा पहुँचा जा सकता है।

परमात्मा गुरुओं का गुरु होने से सर्वज्ञ है और आत्मायें उसकी शिष्य होने से अल्पज्ञ हैं। ईश्वर सर्वव्यापक होने से उसका संयोग वियोग जन्म-मृत्यु नहीं होता पर आत्मापरिच्छिन होने से, उसके संयोग वियोग से शरीर का जन्म मृत्यु लगा रहता है। ईश्वर होने के अनेक प्रमाण है, यथा प्रारम्भ में अग्नि की उत्पत्ति कैसे हुई? सृष्टियों में विभिन्न प्रकार के नियम कैसे कहां से उत्पन्न हुई? मानव शरीर के अन्दर और बाहर तथा इन्द्रियों में विभिन्न प्रकार के गुणों से युक्त को बनाने वाली आदि शक्ति किसके विज्ञान के आधार पर साँचा तैयार की।

- मु.पोस्ट-मुरारई, जिला-वीरभूम (पं बंगाल)-731219, मो. 8158078011

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 7000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

क्या ईश्वर है? तो कहां रहता है? और क्या करता है?

❒ अरूणा सतीजा

ईश्वर है यह विचारधारा आस्तिकता की पृष्ठ भूमि है। ईश्वर नहीं है ऐसा कहने वालों को नास्तिक कहा जाता है।

पश्चिम के जिन विद्वानों ने ईश्वर की सत्ता से इन्कार किया उनकी दृष्टि में बाइबिल के ईश्वर का स्वरूप था। यदि उन्होंने वेद में वर्णित ईश्वर की व्याख्या जानी होती तो वे सब ईश्वर विश्वासी होते।

नास्तिकों की कोटी में वैज्ञानिकों को भी शामिल किया जाता है। धर्म और विज्ञान परस्पर विरोधी विचारधारा है। ऐसी भी मान्यता है जैसे एल्बर्ट मेकोम्स विन्चेस्टर के शब्द में ''जब मैंने कॉलिज में प्रवेश के समय विज्ञान विषय चुना तो मेरी चाची ने मुझे अलग ले जाकर अपना इरादा बदल देने को कहा। क्योंकि उसे डर था कि विज्ञान से मेरा ईश्वर के प्रति विश्वास शिथिल पड़ जाएगा क्योंकि अन्य लोगों की तरह वह भी समझती थी कि विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी है। मुझे प्रसन्नता एवं गर्व है कि वैज्ञानिक बनने के बाद भी, परमात्मा के प्रति मेरा विश्वास विचलित नहीं हुआ बल्कि ईश्वर की कारीगरी को देख कर मेरा विश्वास और भी दृढ़ हो गया। हमारे लिए यह सुखद आश्चर्य है कि वैज्ञानिक भी विशेषकर विदेशी (पश्चिमी) ईश्वरीय सत्ता पर अटूट विश्वास रखते हैं।

कुछ दिन पूर्व मुझे ''ईश्वर'' नाम की पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला जिसमें चालीस पश्चिमी वैज्ञानिकों के ईश्वर के प्रति आस्था के विचार वर्णित थे। सभी इस विषय से एक मत थे कि ''ईश्वर'' है जो सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड की सर्वोपरि सत्ता है। इन वैज्ञानिकों में-भौतिकविद, रयायनविद, प्राणिविद, भूगर्भविद, कृषि-वृक्ष वनस्पतिविद, कीट और जन्तुविद तथा ज्योतिषविद शामिल थे। उन सबका एक व्यवस्था, सुघड़ता तथा नियमबद्धता इतनी अधिक दिखाई दी कि वह मान ही नहीं सकते कि यह संसार बिना किसी नियामक, कर्त्ता तथा व्यवस्थापिक के स्वयंमेव तथा अकस्मात पैदा हो गया प्रत्युत इसकी रचना ऐस ''पुरुष'' की इच्छा और योजना के अनुसार हुई है। जिसमें बुद्धि और ज्ञान की प्रकाष्ठा थी (सर्वज्ञ) जिसमें योजना अनुसार रचने तथा जारी रखने का सामर्थ्य था (सवशक्तिमान) जो इसे सम्पूर्ण विश्व में लागू कर सकता था। (सर्वव्यापक) स्पष्ट है कि ''ईश्वर'' है। सृष्टि की रचना सर्वोच्च-आत्म तत्व परमात्मा के बिना और कोई नहीं कर सकता। ईश्वर केवल है ही नहीं परन्तु वह महान है। जिसे शीश झुकाकर हम सब नमस्कार करते हैं।

कुछ महान वैज्ञानिकों के मुख से-

ओ! मेरे ईश्वर, जब मैं आश्चर्य से चकित तेरे हाथों से निर्मित सब लोकों को सोचता हूँ, देखता हूँ, सितारों को और सुनता हूँ बिजली की कड़क, अनुभव करता हूँ विश्व में तेरी प्रदर्शित शक्ति को तब गाती है मेरी आत्मा, मेरे रक्षक प्रभु तेरे लिये, तू कितना महान है तू कितना महान है।'' (डोनाल्ड रोर्बट कार) भूविज्ञान

उगल रही प्रकृति गीतों को। सृष्टा की स्तुति में हो विभोर।।

(लारेंस कोल्टन वौकर) वनान्वेर्षा

कैसे मनुष्य का दिमाग तरह-तरह की जटिल चीजे बना देता है। वहीं बुद्धि इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि जटिल जीवधारियों की रचना भी किसी परम बुद्धि का चमत्कार है। मेरा विश्वास है कि परमात्मा है जो परिश्रम पूर्वक उसे खोजते हैं वह उन्हें पुरस्कृत करता है (मर्लिन ग्रान्ट स्मिथ, विद्वानों की सक्षिया)।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि परमात्मा हमारा निर्माता, त्राता, मुक्ति दाता प्रेमकर्त्ता और मित्र है। (एडमण्ड कार्ल कौर्न फील्ड ईश्वर ही आदि और अन्त)

अत: उपरोक्त विचारों से सिद्ध हो गया कि 'ईश्वर' है और उसकी सत्ता को भी सभी स्वीकार करते हैं।

आधुनिक युग के महान मनीषी दार्शनिक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में जो विचार प्रस्तुत किए है, उनके द्वारा ईश्वर के स्वरूप को समझा जा सकता है। ऐसा मेरा मत है। यह भी विश्वास है कि महर्षि दयानन्द ने ईश्वर का जो स्वरूप प्रस्तुत किया है उसे जानकर नास्तिकता स्वयं मिट जाएगी।

इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष हैं। स.प्र. समु.-7

ईश्वर की सत्ता पर तो लगभग सभी सांप्रदाय विश्वास करते है किन्तु वह कैसा है, कहां रहता है, क्या करता है, क्या कर सकता है, क्या नहीं कर सकता। इन सब प्रश्नों पर मत विभिन्नता है। इसी अनेकता ने ही विभिन्न सांप्रदायों को जन्म दिया है।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के दस नियमों की रचना करते हुए जो प्रथम दो नियम लिखें है वह इतनी तर्क शुद्ध अव्याप्ति और अतिव्याप्ति दोष से रहित पूर्ण है कि शायद इसके बाद ईश्वर के विषय में कुद और कहने को बचता ही नहीं।

पहला नियम- सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

दूसरा नियम-ईश्वर, सच्चिदानन्द, स्वरूप, निराकर, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्व अर्न्तयामी, अजर, अमर, अभय, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी चाहिए।

अत: ईश्वर एक है (वेदों में वर्णित है) परन्तु उसके गुणकर्म स्वभाव के कारण उसके नाम अनेक है। जैसे व्यक्ति एक होता है परन्तु उसके रिश्तों के नाम कई होते हैं।

ईश्वर निराकार है उसकी कोई शक्ल सूरत नहीं है। उसकी कोई मूर्ति भी नहीं बन सकती। ईश्वर सूक्ष्म से सूक्ष्म है तथा सर्वव्यापक है। वह इतना सूक्ष्म है कि आत्मा जैसी अतिसूक्ष्म में भी विद्यमान है। सभी जगह व्यापक होने के कारण उसे महाजन भी कहा जाता है।

ईश्वर अजन्मा, अनन्त और अनादि है। वह न कभी जन्म लेता है और ना ही कभी मरता है।

वह ज्ञानवान तथा न्यायकारी है। संसार में फैले सम्पूर्ण सद्ज्ञान का स्त्रोत है। वह पूर्ण ज्ञानी है। वेदों के रूप में उसने सारा ज्ञान प्राणीमात्र के कल्याण के लिए दिया है। ईश्वर अनुपम है। उसके समान दूसरा कोई नहीं है। यह तो सिद्ध हो गया कि ईश्वर हैं परन्तु सबसे जटिल प्रश्न तो यह है कि वह कहाँ रहता है। इस बारे में जितने साप्रंदाय है उतने ही भिन्न-भिन्न मत है।

सभी सांप्रदायों ने अपने-अपने मतानुसार उसे मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च, सातवे तथा तीसरे आसमान पर बैठा दिया है। ईसामसीह तो ईश्वर का इकलौता पुत्र था जिससे आदि सृष्टि की उत्पत्ति हुई।

अपने-अपने भगवानों की प्रतिमाओं की मंदिरों में स्थापना कर उसे कमरों में बंद कर दिया। इन मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा कर उन्हें जीवित शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया और वह भक्तों के लिए वरों के दाता बन गए। इतना ही नहीं उन मूर्तियों का मानवीकरण कर दिया। साधारण मानव की तरह उन्हें भी भूख-प्यास, दु:ख-सुख आदि सताने लगे।

ऐसे भक्त कितने नादान है उनकी बुद्धि पर तरस आता है। जब मूर्ति पुजारी के रख-रखाव में है तो तुम्हारे दु:ख पीड़ा को कैसे हरेगी। तुम लाख श्रद्धा से उसके सामने गिड़गिड़ाओं, चाहे सोना-चांदी चढ़ाओं परन्तु वह तुम्हारी ओर मुड़कर भी नहीं देखेगी क्योंकि वो जड़ है।

आज प्रतिमा को खुश करने के लिए मानव बलि दी जाती है, जो ईश्वरीय भावना के विरूद्ध है।

आज कुछ ऐसे व्यक्ति भी है जो स्वयं को ईश्वर मानते है। ऐसे भगवानों के लाखों शिष्य अनुयायी हैं जिनका श्रद्धा के नाम पर भरपूर शोषण किया जाता है। ईश्वर के नाम पर होने वाला यह अत्याचार पाप है, अपराध है।

महर्षि दयानन्द ने आह्वान किया था कि ''वेदों की ओर लौट चलों। वेद ईश्वरीय वाणी है। इनमें अणु से लेकर ईश्वर तक के सत्यज्ञान का वर्णन है। ईश्वर संसार के अणु-अणु तथा अति सूक्ष्म आत्मा में भी विद्यमान है परन्तु हर वस्तु में दिखाई नहीं देता।

ईश्वर कण-कण में है परन्तु हर कण ईश्वर नहीं। जैसे आग में लोहे का गोला आग स्वरूप तो हो जाता है परन्तु आग नहीं। ईश्वर कहां रहता है इसका बहुत सुन्दर तथा सही उत्तर दिया है, महात्मा आनन्द स्वामी ने-तेरा प्रभु तुझमें बसे। जाग सके तो जाग।।

ईश्वर के दर्शन तो मात्र मानव शरीर में ही होते हैं। ईश्वर को देखने वाले नेत्र तो इस मनरूपी मन्दिर में खुलते है। यह शरीर जो 'ब्रह्मपुर' है इसमें एक छोटा सा हृदय कमल मन्दिर है। इस मन्दिर के पीछे एक छोटा सा आकाश है। इस आकाश के भीतर जो कुछ है उसका अन्वेषण करना चाहिए। यही कमल का मन्दिर भक्त और भगवान के मिलने का स्थान है। इस मानव शरीर के अंदर ही उसकी खोज करनी चाहिए, इसी स्थान का नाम वह 'गुहा' है जिसके संबंध में यजुर्वेद कहता है ''वेनस्तत पश्यन्निहित गुहा' यही बात अर्थववेद के दूसरे काण्ड के पहले ही मन्त्र में कही गई है। वेद भगवान तथा उपनिषद ने जब मानव शरीर को भगवान का मन्दिर बताया है तो किसी आस्तिक को इसमें संन्देह नहीं होना चाहिए।

यम-नियमों का पालन कर ईश्वर तक पहुंचा जा सकता है। अत: मन मन्दिर ही ईश्वर का मुख्य स्थान है। ईश्वर यहीं ही से सारे ब्राह्माण्ड की रचना करता है।

ईश्वर के मुख्य चार कार्य है- 1. सृष्टि की रचना करना। 2. सृष्टि को धारण करना अर्थात् सम्पूर्ण जगत की व्यवस्था करना। 3. समय आने पर अर्थात् पृथ्वी (सृष्टि) का कार्यकाल पूरा होने पर प्रलय करना। 4. मानव को उसके कर्मानुसार फल देना। महर्षि दयानन्द, ऋग्वेददादिभाष्यभूमिका के सृष्टि प्रकरण में कहते है कि-परमात्मा ही सृष्टि की उत्पति करता है। शंकर ने सृष्टि को ईश्वर की लीला का फल कहा है। आचार्य निम्बार्क के अनुसार ईश्वर अपनी शक्ति से जगत् की 'सृष्टि और उसका संहार करता है।''

परमात्मा सृष्टिकर्त्ता है। वह सविता भी है। क्योंकि इसी से सृष्टि प्रसावित हुई है। वर्तमान सृष्टि से पहले भी सृष्टि थी। सृजन के बाद विकास के बाद ह्रास और फिर प्रलय। यह इस सृष्टि का शाश्वत नियम है। यह क्रम सदा से चलता आ रहा है और आगे भी चलता रहेगा। सृष्टि प्रवाह से अनादि है।

जीवन में नित्य प्रति घटने वाली घटनाओं में मानव जब देखता है कि संसार में कोई भी चीज बिना बनाए नहीं बनती जैसे कुम्हार के बिना घड़ा जुलाहे के बिना कपड़ा और सुनार के बिना भूषण नहीं बनते। तब वह इस नियम की स्थापना करता है कि बिना कारण कोई कार्य नहीं होता। जैसे घड़ा बनाने के लिए तीन-तीन का होना अनिवार्य है। कुम्हार मिट्‌टी और दण्ड, (डण्डा) व चक्र। ऐसे ही सृष्टि की रचना के लिए तीन का होना अनिवार्य है। ईश्वर आत्मा और प्रकृति।

इन तीनों कारणों के बिना संसार की कोई वस्तु नहीं बन सकती। इसी को वैदिक धर्म में 'त्रैतवाद' की संज्ञा दी गई है।

घड़ा कुम्हार बनाता है। ईश्वर संसार रचाता है।
सूरज-चांद उसी की रचना। अपने आप कुछ नहीं बन जाता।
सत्यार्थ प्रकाश यही सिखाता।

ईश्वर का मुख्य चौथा कार्य है, जीवों को कर्मो का फल देना। जिस लिये ईश्वर ने इस जगत की रचना की है। ईश्वर न्यायकारी है। वह प्रत्येक जीव को उसके कर्मो के अनुसार फल देता है। न राई भर अधिक और न ही राई भर कम। कर्म करने के पश्चात् जीव को उसका यथायोग्य फल भोगना ही पड़ता है। किए गए कर्म का फल कभी भी माफ नहीं होता। एक ही आत्मा अपने कर्मो के फलस्वरूप मनुष्य शरीर में तथा पशु-पक्षी, कीट, पतंग आदि शरीरों में घूमता रहता है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु ईश्वर फल देने में परतन्त्र है। वह ईश्वर किसी को न कम और न ही अधिक दण्ड दे सकता है। आत्मा और शरीर के मिल जाने का नाम जन्म है। इनके अलग-अलग हो जाने का नाम मृत्यु है। जीवन व मृत्यु जीवन की दो गतियां है। जो ईश्वर अधीन है। सृष्टि की तरह इनका प्रवाह भी अनादि है।

मनुष्य का अंतिम लक्ष्य है मुक्ति पाना। जीवात्मा अति उत्सुक होने पर महान प्रयत्न से प्रभु के दर्शन कर पाता है। ध्यान प्रभु दर्शन में अतिआवश्यक है। प्रभु की सत्ता का ज्ञान होता है परम पुण्य आस्तिक आत्मा को।

प्रभु के ज्योर्तिमय शुभ-स्वरूप का दर्शन होता है आत्मा में समाधि द्वारा। अत: प्रभु ज्ञेय, ध्येय, दर्शनीय, अनुभवनीय है।

ईश्वर को सच्चिदानन्द स्वरूप एवं स्वप्रकाश स्वरूप महर्षि दयानन्द ने लिखा है। प्रभु प्राप्ति का आनन्द अनुभव का विषय है। प्रभु का आनन्द अनिवर्चनीय होने से उसका वर्णन वाणी द्वारा नहीं किया जा सकता। अत: ऋषियों ने उसे नेति नेति कह कर पुकारा है।

वेदों में ऐसा वार्णित है कि ईश्वर शक्ति का मात्र दो प्रतिशत ब्रह्माण्ड की रचना में कार्य करता है और शेष 98 प्रतिशत आनन्दमय है। मोक्ष के बाद मुक्ति अवस्था में जीव इसी आनन्दमय अवस्था का आनन्द भोगता है। आनन्दित होता है। अत: उपरोक्त लिखित वर्णन के बाद सब संशय दूर हो जाएंगे कि ईश्वर है या नहीं? कहां रहता है? और क्या करता है?

- सौम्य अपार्टमेंट बी-9, फ्लैट न.-101, ध्रुव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राजस्थान),
फोन-0141-2623732, मो. न. 09460183872

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

क्षमा-क्षमा धर्मो ह्युत्तमः

❒ भद्रसेन

क्षमा का अर्थ है-गलती, अपराध करने वाले को दण्ड दिये बिना ही छोड़ देना, माफ कर देना, बदला न लेना। पर इसके लिए उस अपराध के परिणाम, प्रभाव, नुकसान, परिस्थिति और व्यक्ति पर विचार करना जरूरी हो जाता है। क्योंकि सामाजिक व्यवहार में अनेक बार ऐसे अवसर आते हैं, जब कोई व्यक्ति न चाहते हुए भी कोई अपराध, गलती कर बैठता है। वह जानबूझ कर ऐसा नहीं करता, अपितु अपने अधूरे ज्ञान के कारण या पूरी बात का पता न होने से या दूसरों के ऊपर विश्वास कर लेने से या कई बार अपनी अज्ञानता, अदूरदर्शिता, असावधानी, लापरवाही, आलस्य आदि के कारण गड़बड़ कर बैठता है। अन्त में जब परिणाम सामने आता है, तो वह व्यक्ति पश्चाताप करता है, कानों के हाथ लगाता है, आगे ऐसा न करने की बार-बार शपथ खाता है। इस प्रकार सच्चे दिल से पछतावा अनुभव करने वालों को माफ कर देना ही उचित होता है? और तभी सामाजिक व्यवहार चल सकता है। इसी दृष्टि से ही स्मृति शास्त्रों में प्रायश्चित की चर्चा और विधान मिलता है। **1. भज क्षमां नीति. 78 क्षान्तिश्चेत् कवचेन किम् नीति.2।** देहधारियों के पास क्षमा है, तो कवच का क्या लाभ अर्थात् कवच की तरह रक्षा करती है। **2. तस्मात्तेनेह कर्तव्य प्रायश्चितं विशुद्धये। याज्ञवल्का स्मृति 3, 220।**

ऐसे ही सामाजिक व्यवहार के कई क्षेत्रों में बड़े-छोटे का सम्बन्ध होता है। जैसे कि परिवार में माता-पिता और बच्चे, विद्यालय में शिक्षक तथा शिष्य, कार्यालय या कारखाने आदि में अधिकारी एवं कर्मचारी आदि। ऐसे क्षेत्रों में यदि छोटो कोई अपराध करता है तो उसको सदा दण्ड देने की जरूरत नहीं होती। अधिकार माफ करना ही अधिक उचित होता है? और तभी वह व्यवहार चलता है, ऐसा स्थिति में क्षमा कर देने से कई बार दण्ड की अपेक्षा क्षमा का उससे भी अधिक प्रभाव होता है। हां, उसको यथापेक्षित सावधान कर देना चाहिए। ऐसी दश्म को ही सामने रख कर भरतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने 'विनय' नामक कविता में कहा है-

'माता-पिता गुरु स्वामी राजा, जो न छमा डर लावै।
तो सिसु-सेवक प्रजा न को विधि जग में निबहन पावै।।22।।

परिवार और समाज में रहते हुए अनेकों के साथ हम अनेका विध व्यवहार करते हैं। परस्पर के वर्ताव में अनेक बार कोई एक दूसरे से बड़ा होने के कारण या धन, सामाजिक सम्बन्ध आदि के कारण एक दूसरे से इस प्रकार के शब्द कहता है या ऐसा व्यवहार करता है। **1. क्षमा प्रभवितुः। भूषणं। नीति-83 अभ्युदये क्षमा नीति-63 क्षमा बड़न को चाहिए।** जो सर्वथा अनुचित, असहय होता है, वह स्थिति या व्यवहार उस समय जैसे-कैसे बीत जाता है। दोनों के जीवनों में या स्थितियों में परिवर्तन आ जाता है। यदि पिछले व्यवहारों को स्मरण करके एक दूसरे से बदला लेने की सोचने लगें, तो कम से कम पारिवारिक सम्बन्ध कभी भी स्थिर न हो सकेंगे। यहां परस्पर क्षमा के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं रहता। इसने तब मुझे यह कहा था, ऐसे वर्ता था, ऐसा सोच कर उससे बदला लेने की भावना से कभी गुजारा नहीं चल सकता। कई बार बड़ों से भी गलती हो जाती है, उनके प्रति दण्ड या बदले की भावना जचती नहीं।।

क्षमा शब्द का मूल अर्थ है-सहना=क्षमुष सहने! जैसे कि हर व्यक्ति से यदा-कदा अनेक प्रकार के नुकसान होते हैं, पर कोई भी अपने आप को हर समय दण्ड नहीं देता, वह सब सहा जाता है। ऐसे ही जिस-जिस के साथ जितना-जितना अपनापन होता है, हम उनकी गलतियों को उतना-उतना सह लेते हैं। कई बार हानि के अनुपात से अपनी शक्ति के अनुरूप सहते हैं।

1. क्षमा हि परमं बलम्, शक्ताजां भूषणं क्षमा महा. उद्योग 33, 49 क्षमा वशी कृति र्लोके, क्षमया किन्न साध्यते महा. उद्योग 33, 50। 2. तभी तो कहा है-क्षमा गुरुजनो नीति-22, गुरौ नम्रता नीति-62।

हां, विशेष सामाजिक परिस्थितियों में हानि की अधिकता में या दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव की दृष्टि से या उस अपराध का जब दूसरों पर उल्टा प्रभाव होता है, तब उस अपराध को क्षमा करना अनुचित होता है। चाहे वह सच्चे दिल से अपनी गलती को अनुभव करता हो। शत्रु या उस द्वारा किस जाने वाले कार्य अथवा युद्ध आदि की स्थिति में माफ करना सर्वथा असम्भव होता है?, पर ये विशेष अपवाद होते हैं। प्रतिदिन के जीवन के व्यवहार में तो क्षमा करना अत्यन्त आवश्यक होता है। धरती का एक नाम क्षमा भी है, जैसे वह सब कुछ सहन करती है, ऐसे ही जीवन में व्यक्ति को बहुत कुछ सहनें की अपेक्षा होती है। हां, जब कोई साधारण ढंग से धूलि में पैर न रख क अनादर से रखता है, तो धूलि एक दम उसके सिर पर सवार हो जाती है, तब वह क्षमा नहीं करती। अतः क्षमा का प्रयोग परस्पर के व्यवहार, स्वभाव, परिणाम का निर्भर करता है। **1. क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतिनामेव भूषणम्। अपराधिशु सत्त्वेषु नृपतेश्चैव दूषणम्।। अपरोद्वषु हितोप 2.163।** अपराध करने पर शत्रु और मित्र को समान रूप से क्षमा करना महात्माओं के लिए गुण है, पर अपराधियों को दण्ड न देकर क्षमा करना प्रशासक के लिए हानिकारक भी हो सकता है। **2. प्रतिष्ठायै क्षमो। 3. पादहतं युदत्थाम मूर्धानमघिरोऽति। स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद् वरं रजः।। शिशुपालवध 2.46**

- भद्रसेन 182, शालीमार नगर, होशियारपुर-145001 (पंजाब)

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

नयी ऊर्जा का अनुभव हुआ टंकारा में

महामानव महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुगामी होने के कारण वर्षो से मन में एक इच्छा थी कि किसी दिन महर्षि की जन्मस्थली टंकारा के दर्शन कर सकूं। परन्तु देव इच्छा बलवती होने के कारण वर्षो से यह स्वप्न ही बना रहा। किन्तु संस्कृत की यह सूक्ति प्राप्त व्यमर्थ लभते मनुष्य का साक्षात् रूप मुझे देखने को मिला कि अपने आर्यसमाजी भाईयों के साथ वार्तालाप प्रसंग में यह विषय उठा और अचानक सभी ने ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा यात्रा का कार्यक्रम निर्धारित कर लिया। इसके लिए अर्जुनदेव चढ्डा प्रधान जिला आर्यसमाज सभा कोटा से सम्पर्क किया तो उन्होंने उत्साहवर्धन करते हुए जिला प्रतिनिधि सभा के माध्यम से यात्रा व्यवस्था करवाने का आश्वासन दिया।

आर्यसमाज जिलासभा कोटा के बैनर तले ओ३म् ध्वज हाथ में लिये, गले में आर्यसमाज से निर्मित परिचय पत्र गले में धारण कर हमारा दल दिनांक 13 फरवरी शुक्रवार को आसनसोत एक्सप्रेस में कोटा से रवाना हुआ। दल में 13 पुरूष, 6 महिलाएं कुल 19 सदस्य थे। ऋषि महिमा के गीत गाते हुए हमारा दल दूसरे दिन अहमदाबाद पहुंचा। अहमदाबाद में आर्यसमाज कांकरिया में हमारे ठहरने की व्यवस्था की गई। जो बहुत बढ़िया थी। उत्तम आतिथ्य के लिए वहां के अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं। दिनभर अक्षरधाम, कांकरिया तालाब आदि अनेक स्थानों का भ्रमण किया।

अहमदाबाद से प्रस्थान कर हम लोग रात्री में मौरवी पहुंचे परन्तु ऋषि जन्मभूमि पर पहुंचने की उत्कण्ठा इतनी प्रबल थी कि वहां रूके बिना ही सीधे टंकारा के लिए निकल पड़े। इस प्रकार हमारा दल 15 फरवरी रात्री में टंकारा पहुंचा। टंकारा पहुंचने पर ऐसा लगा जैसे किसी साधक की वर्षों की साध पूरी हो गई हो। यात्रा की सारी थकान जाती रही। जिलासभा प्रमुख अर्जुनदेव चढ्डा के निर्देशन पर हमारे लिए ठहरने का प्रबंध पहले से था। निद्रा ने कब आगोष में ले लिया पता ही नहीं चला।

टंकारा में प्रति वर्ष ऋषिबोधोत्सव का आयोजन श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा शिवरात्री के अवसर पर फाल्गुन मास में किया जाता है। इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का यह पर्व 11 फरवरी से 28 फरवरी 2015 तक आयोजित किया गया। जिसमें आचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद परायण यज्ञ का आयोजन किया गया। साथ ही आर्यजगत के प्रख्यात भजनोपदेषक श्री सत्यपाल पथिक तथा श्री कुलदीप शास्त्री एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता जी सुमधुर भजन एवं गीत सुनने को मिले।

महर्षि की पवित्र जन्मभूमि के स्पर्श के साथ ही 16 फरवरी को हमारे दिन की शुरूआत प्रातःकालीन प्रभातफेरी से हुई। आर्यावर्त के विभिन्न आर्यसमाजों एवं आर्य संगठनों से आये हुए आर्यजनों, साधु संन्यासियों ने वेदमंत्रों, भजनों एवं गीतों की धुन से टंकारा को गुंजायमान करते हुए टंकारावासियों को उद्बोधित किया।

उषा की अरूणिम बेला के साथ आचार्य रामदेव जी के पौरहित्य में ऋग्वेद पारायण यज्ञ प्रारंभ हुआ। जिसमें मुख्य यजमान हीरो समूह के गुंजाल परिवार के साथ स्थानीय सांसद जो केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भी हैं श्री मोहनभाई कुण्डारिया ने उपस्थित होकर ऋग्वेदीय ऋचाओं से स्वाहोच्चार के साथ आहुतियां दी। तथा यज्ञ उपरान्त अपने सम्बोधन में ट्रस्ट के कार्यो में हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया और ऋषिभक्तों को टंकारा तक आने में कोई कठिनाई न हो इसके लिए टंकारा तक रेलवे लाइन लाने का संकल्प को व्यक्त किया।

भव्य शोभायात्रा

दोपहर में विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जिसका शुभारम्भ ओ३म् ध्वजा लहराकर किया गया। इस शोभायात्रा में बोधोत्सव में पधारे सभी आर्यजनों, साधु सन्यासियों, ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। पंक्तिबद्ध हो ओम् ध्वज हाथ में लिये गले में केसरिया दुपट्टा धारण कर ऋषि जय जयकार के घोष के साथ शोभायात्रा आगे बढ़ती रही। बीच-बीच में आर्यवीर दल के प्रषिक्षित युवक एवं वीरांगनाओं द्वारा करतब और व्यायाम प्रदर्षन किया जा रहा था। शोभायात्रा की भव्यता ने टंकारावासियों को दांतों तले अंगुली दबाने को मजबूर कर दिया। इस भव्य शोभायात्रा एवं आर्यों के विषाल जनसमूह और वैदिक धर्म के प्रति उनकी श्रद्धा को देखकर निश्चित ही टंकारा निवासी स्वंय को गौरवान्वित महसूस कर रहे होंगे। टंकारावासियों द्वारा जगह-जगह पुष्पवर्षा कर शोभायात्रा का स्वागत किया।

इस शोभायात्रा की सबसे बड़ी विषेषता यह रही कि मुस्लिम समुदाय के लोगों द्वारा इसका स्वागत किया गया। उन्होंने कई स्थानों पर पुष्पवर्षा कर साथ ही शरबत की छबील लगाकर यात्रा का स्वागत किया। हमने भी जिलाप्रतिनिधि सभा के बैनर तले शोभायात्रा में हिस्सा लिया। रात्री के दौरान श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें भजनों एवं गीतों के माध्यम से ऋषि दयानन्द को उनके द्वारा किये गये महानतम कार्यों के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की गई और ऋषि का गुणगान किया गया।

18 फरवरी को प्रातः अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार द्वारका, पोरबंदर, सोमनाथ आदि गुजरात के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों को देखने के लिए हमारा दल निकल पड़ा।

योग्यपिता की योग्य संतान

अपनी सम्पूर्ण यात्रा पूर्णकर वापसी में जब लौट रहे थे तो ट्रेन में खिड़की से प्रकृति के विहंगम दृश्यों को देखते हुए अचानक एक तेजस्वी व्यक्तित्व का चेहरा उभर आया, जो टंकारा की उस यात्रा के दौरान सब जगह दिखलाई दे रहा था और वह शक्स था श्री अजय सहगल टंकारा वाला का। ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर प्रत्येक कार्यक्रम की सफलता के लिए यदि कोई श्रेयभागी है तो वह अजय सहगल ही हैं। चाहें अतिथियों के ठहरने की व्यवस्था हो या फिर भोजन की, चाहें भजन प्रवचन का आयोजन हो, या फिर शोभायात्रा का। हर जगह अजय जी हनुमान की तरह कार्य करते दिखाई दिये। वर्षो पूर्व श्री राम नाथ सहगल ने जिन उद्दाक्ष परम्पराओं का सृजन किया उसको ऊंचाईयां दी अजय सहगल जी ने।

अगर आर्य समाज भुज गुजरात के कार्यकर्त्ताओं की चर्चा ना करे तो टंकारा यात्रा विवरण पूर्ण नहीं, टंकारा ऋषि लंगर की सुव्यवस्था इस आर्य समाज के युवक कार्यकर्त्ताओं ने कि विशेष कर महिलाओं ने, इस वर्ष डॉ. वी.एच. पटेल एवं माता भानु बेन कि अनुपस्थिति खलती रही लेकिन इस वर्ष उनके पोते ने सभी कार्यभार संभाल रखा।

शायद पिता से प्राप्त वो संस्कार ही थे जिन्होंने उनके मन में ऋषि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न की तथा ट्रस्ट के माध्यम से जनसेवा कर ऐसा लगता है वे ऋषि दयानन्द के ऋण से उऋण होने का प्रयत्न कर रहे हों। कोटा पहुंचने पर आर्यप्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा के नेतृत्व में आर्य समाज कोटा द्वारा हम सभी का भव्य स्वागत एवं सम्मान किया गया और यात्रा के अनुभव का श्रवण किया प्रभु फिर से इस यात्रा का अवसर प्रदान करें।

प्रभुसिंह कुषवाह, आर्यसमाज जिलासभा, कोटा

વો જબ યાદ આયે

રમેશ મહેતા, (ટંકારામિત્ર)

ગયા અંકમાં ટંકારાના યાદ ન જાયે દિલ સે શીર્ષકસ્થ લેખમાં સ્વ. ઓંકારનાથજીના જીવનના કેટલાંક વણ વાંચ્યા પૃષ્ઠ પર પ્રકાશ પાડવાનો પ્રયાસ કર્યો. હવે કરીએ શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ અન્તર્રાષ્ટ્રીય ઉપદેશક મહાવિદ્યાલયના આદ્ય આચાર્ય સ્વ. સત્યદેવજી વિદ્યાલંકારના જીવનપર એક દ્રષ્ટિ –

સ્વ. આચાર્યજીના શબ્દોને યાદ કરીને કહું તો સ્વનામધન્ય મહેરચન્દ મહાજનજીએ ટ્રસ્ટનો પ્રબંધ પોતાના હાથમાં લીધો ત્યારે ટ્રસ્ટની મુખ્ય પ્રવૃત્તમાં આયુર્વેદ કૉલેજનું સંચાલન હતું. કૉલેજમાં વિદ્યાર્થિઓના આન્દોલન અને ઋષિવરના સિદ્ધાન્તોથી વિરુદ્ધનું વાતાવરણ જોઈને મહાજનજી દુઃખી થઈ ગયા હતા. તેમણે ટ્રસ્ટની સ્થાપનાના મુખ્ય ઉદ્દેશ્યમાં જોયું તો લખ્યું હતું કે સંસ્થામાં ઋષિના વિચારોનો પ્રચાર પ્રસાર સંસારમાં થાય તે માટે ઋષિના સિદ્ધાન્તોને અનુરૂપ વિદ્યાલયો અને ગુરુકુલો ચલાવવા.

મહાજનજીએ ટ્રસ્ટની મિટીંગમાં કહ્યું કે આધુનિક શિક્ષણના ક્ષેત્રમાં આપણે ડી.એ.વી.ના ઝંડા નીચે શાળાઓ અને કૉલેજો ચલાવીએ છીએ, તેનાથી કદાચ આપણી સંસ્કૃતિનું રક્ષણ આપણે કરી રહ્યા છીએ પણ ઋષિવરના વિચારોને અનુરૂપ કાર્ય નથી કરી શકતા. ટંકારા તો આપણા આચાર્ય પ્રવરની જન્મભૂમિ છે, ત્યાં એવું કામ થવું જોઈએ કે સમગ્ર સંસારને પ્રેરણા મળે. ટ્રસ્ટી મંડળે સર્વાનુમતે ટંકારામાં ઉપદેશક મહાવિદ્યાલયની સ્થાપનાનો નિર્ણય કર્યો.

ઉપદેશક મહાવિદ્યાલય માટે યોગ્ય આચાર્યની શોધ શરૂ થઈ. મહાજનજીએ ડી.એ.વી. કૉલેજ જલંધરના તત્કાલીન આચાર્ય સૂરજભાણજીને ડી.એ.વી. સંસ્થાઓમાંથી કોઈ યોગ્ય નામ સૂચવવા કહ્યું. સૂરજભાણજીએ તાજેતરમાં જ કૉલેજના હિન્દી વિભાગાધ્યક્ષ પદેથી નીવૃત્ત થયેલ પં. સત્યદેવ વિદ્યાલંકારના નામની ભલામણ કરી. મહાજનજીએ સત્યદેવજીને પોતાના દિલ્હીના નિવાસ સ્થાને આવવા વિનંતી કરી.

શ્રી સત્યદેવજી દિલ્હીમાં મહાજનજીના નિવાસ સ્થાને પહોંચ્યા, સાંજ ઢળવા આવી હતી. વરસાદ પુરજોશમાં હતો. છત્રી હોવા છતાં આચાર્યજી પુરેપૂરા પલળૂ ગયેલા હતા. મહાજનજીએ ઘરમાં આવકાર્યા. પોતાની સ્થિતિ જોતા આચાર્યજી સંકોચ અનુભવતા હતા. પણ એવી સ્થિતિમાં પણ મહાજનજી આચાર્યજીને ભેટી પડ્યા અને સોફા પર જ બેસાડી દીધા. મહાજનજીને આચાર્યજી સાથેની ચર્ચા પછી લાગ્યું કે ટંકારામાં તેમનું સ્વપ્ન સાકાર કરી શકે એવા શિલ્પી મળી ગયા છે. મહાજનજીએ નમ્રતા પૂર્વક આચાર્યજીને વિનંતી કરી કે ટંકારામાં ઉપદેશક વિદ્યાલયના આચાર્ય તરીકે પદભાર ગ્રહણ કરો. મહીનો પંદરસો રૂપિયાની દક્ષિણા અને વર્ષમાં એકવાર સ-પરિવાર વતન જાલંધર આવવા જવા માટે ફર્સ્ટકલાસનું ગાડીભાડું આપવામાં આવશે.

આચાર્યજી ટંકારા પહોંચ્યા. સ્થિતિ વિકટ હતી. આયુર્વેદ કૉલેજના વિદ્યાર્થિઓના તોફાન અને માંગણીએ સીમા ઓળંગી દીધી હતી. જ્યારે ઉપદેશક વિદ્યાલયના વિદ્યાર્થિઓ દૈનિક સન્ધ્યા-હવન પછી વૈદિક નારા લગાવે તો આયુર્વેદ કૉલેજના વિદ્યાર્થિઓ પૌરાણીક જય જયકારના નારા લગાવવા માંડે. સ્થિતિની ગંભીરતા ઓળખીને ટ્રસ્ટિ મંડળે આયુર્વેદ કૉલેજ બંધ કરવાનો નિર્ણય લઈ લીધો. પરિણામે સ્થિતિ વધારે સ્ફોટક બની. એ એક ઈતિહાસ છે. હવે તેના ઊંડાણમાં જવા જેવું નથી.

ટ્રસ્ટને આર્થિક સદ્ધરતા મળે તે માટે ફંડમાં ભેગા થયેલ રૂપિયા મહાજનજીએ તે સમયે દિલ્હીની જાણીતી કો-ઑપરેટીવ બેન્કમાં ડિપોજીટ કર્યા હતા. દુર્ભાગ્યે બેન્ક ફડચામાં ગઈ. ટ્રસ્ટનું ફંડ પણ ડૂબી ગયું. ટૂંકા ગાળામાં મહાજનજી પણ સ્મૃતિશેષ બની ગયા. ટ્રસ્ટના મંત્રીપદેથી પં. આનન્દપ્રિયજીએ રાજીનામું આપ્યું. ટ્રસ્ટનો ભાર હવે લાલા હંસરાજ ગુપ્તા, પટેલનગર આર્યસમાજ દિલ્હીના પ્રધાન દીવાનચંદજી, મુમ્બઈના જી. આર. મહેતા અને ઓમ્કારનાથજીએ ઉપાડી લીધો.

આચાર્યજીની સામે સહુ પ્રથમ સમસ્યા આવી કે ઉપદેશક વિદ્યાલય ચાલુ તો કર્યું પણ વિદ્યાર્થિઓ ક્યાં? એટલે આચાર્યજીએ પોતાના જ વતન જાલંધરમાંથી કેટલાક બાળકોના માતાપિતાને સમજાવીને વિદ્યાલયમાં લઈ આવ્યા. તો ફિરોજપુર (પંજાબ)ના અનાથાશ્રમમાંથી પણ બે બાળકોને લઈ આવ્યા. જોવાની વાત એ છે કે જાલંધરમાથી લાવવામાં આવેલ વિદ્યાર્થિઓમાંનો એક અત્યારે આફ્રિકાના નાઈરોબીમાં આર્યસમાજનું કામ કરે છે. ફિરોજપુરના અનાથાશ્રમમાંથી લાવવામાં આવેલ એક વિદ્યાર્થી આફ્રિકા કેનિઆના કિસુમુ શહેરની આર્યસમાજમાં પુરોહિત પદે સેવા આપે છે.

ઉપદેશક વિદ્યાલયમાં વિદ્યાર્થિઓને આકર્ષવા માટે ટ્રસ્ટે નક્કી કર્યું હતું કે પ્રત્યેક વિદ્યાર્થીને માસિક ૬૦ રૂપિયાની સ્કોલરશીપ આપવામાં આવશે. આ રૂપિયામાંથી વિદ્યાર્થિઓ પોતાના ભોજન, વસ્ત્ર, પુસ્તકો-નોટબુકસ અને અન્ય વ્યવસ્થા સરળતાથી કરી લેતા હતા. પણ પછી મોંઘવારી વધતી ગઈ તો વિદ્યાર્થિઓને બધી જ સુવિધાઓ ટ્રસ્ટ પુરી પાડશે એવું આચાર્યજીએ નક્કી કર્યું. બે સમયનું ભોજન, દૂધ, વસ્ત્ર અને અન્ય પ્રાથમિક આવશ્યકતાઓ ટ્રસ્ટે પુરી પાડવાનું શરૂ કર્યું.

દિલ્હીના દીવાનચન્દજીનું સ્વાસ્થ્ય ખરાબ રહેવા લાગ્યું. પરીણામે સંસ્થાને દિલ્હી તરફની આવક ઓછી થઈ ગઈ. વિદ્યાલય અને સંસ્થા સુચારુ રુપે ચાલે તે માટે માસિક વ્યય મુમ્બઈથી મહેતાજી અને ઓમ્કારનાથજી મોકલવાના પ્રયાસ કરતા, પણ અપુરતા હતા.

સમય એવો આવ્યો કે આચાર્યજીએ પોતાની જીવનમુડી બેંકમાં ફિક્સ ડીપોજીટમાં મુકી હતી તે વટાવવાની શરુઆત કરી અને વિદ્યાર્થિઓની આવશ્યકતાઓ પુરી કરવા લાગ્યા. આવામાં તો તેમને વેતન મળવાનો તો પ્રશ્ન જ ઊભો નહોતો થતો. ઉપરથી દુકાળના વર્ષો આવ્યા. ૧૯૭૧, ૭૨ અને ૭૩ના વર્ષોમાં સૌરાષ્ટ્રમાં ભયંકર દુકાળ હતો. ટંકારામાં જમીનમાં તો પીવાનું પાણી આજે પણ નથી, એ વર્ષોમાં નદીના વીરડાઓ પણ સૂકાઈ ગયા હતા. જરા વિચાર કરી જુઓ – જાલંધરના પાણીની છત વાળા ક્ષેત્રમાંથી પાણીના એક એક ટીપા માટે ટળવળતા ક્ષેત્રમાં આવીને કાર્ય કરવું કેટલું વિકટ હતું, ઉપરથી કૉલેજ બંધ કરી હોવાને કારણે ટંકારા નગરજનોનો લગભગ અસહયોગ. યોગ્ય વિદ્યાર્થિઓ મળે નહીં.

પણ પોતાના ધ્યેયને વળગી રહ્યા આચાર્યજી. મુમ્બઈના જી. આર. મહેતા જે મેનેજીંગ ટ્રસ્ટી હતા તેમનું અવસાન થયું. ઓમ્કારનાથજી મેનેજીંગ ટ્રસ્ટી બન્યા. તો રામનાથજી સહગલ મહામંત્રી બન્યા. ઓમ્કારનાથજી અને સહગલજીની સંયુક્ત ટીમનો પુરુષાર્થ ધીરે ધીરે રંગ લાવવા લાગ્યો. ટ્રસ્ટની આર્થીક સ્થિતિ સુધરવા લાગી.

પાઠકો ઈતિહાસનું લેખન ખૂબ મુશ્કેલ હોય છે. સત્ય બોલવું અને તે પણ સંસ્થા સાથે જોડાયેલા રહીને ખૂબ જ વિકટ છે. બોલવા જાઈએ તો ઘણાબધા લોકોની નારાજગી સહન કરવા તૈયાર રહેવું પડે. અંગત રીતે નારાજગી સહન કરવાનો વાંધો નથી પણ જ્યારે સંસ્થા સાથે જોડાયેલા હોઈએ ત્યારે સંસ્થાના હિતનું પણ ધ્યાન રાખવું પડે. હું કંઈ સાધુ નથી. એટલે કોણે આચાર્યજી સાથે કેવો વ્યવહાર કર્યો તેના ઊંડાણમાં નથી જતો.

મેં જેમ પ્રારંભમાં કહ્યું તેમ આચાર્યજૂને માસિક પંદરસો રૂપિયાનું વેતન અને દર વર્ષે જાલંધર સુધી આવવા-જવાનું ફર્સ્ટ કલાસનું ભાડું આપવામાં આવશે તેવું નક્કી થયું હતું. પણ સંસ્થાની સ્થિતિ જોઈને આચાર્યજીએ સ્વયં જ ટ્રસ્ટના પદાધિકારીઓને લખીને આપ્યું કે વેતનમાં માસિક પાંચસો રૂપિયા જ લેશે. બીજું કંઈ નહીં.

પણ ટ્રસ્ટની સ્થિતિ એવી હતી કે માસિક વેતન પણ વર્ષો સુધી લીધું નહોતું. ઉપરથી પોતાની અંગત બચતના પૈસા સંસ્થાના હિતમાં વાપરી નાખ્યા હતા. પોતાની અંગત જરૂરીયાતો જેવી કે ઘર માટે સીધું-સામાન, શાકભાજી પણ પોતાના ખર્ચે જ લાવતા, ત્યાં સુધી કે ઘર માટે ગૌશાળામાંથી દૂધ લેતા તો તેના પૈસા પણ બજારભાવે ઘણીને સંસ્થાને ચુકવી દેતા.

સવારે ચાર વાગે ઊઠીને વિદ્યાર્થિઓને પણ ઉઠાડવા, ભણાવવા, વિદ્યાર્થિઓનું ધ્યાન રાખવું, સંસ્થાના સામાન્ય હિસાબ જોવા, વહીવટી ધ્યાન રાખવું, ગૌશાળાનું ધ્યાન રાખવું વિગેરે વ્યવસ્થા જોતા. આખા દિવસની આવક-જાવકનો હિસાબ રાત્રે જ્યાં સુધી ન મળી જાય ત્યાં સુધી સુવા ન જતા.

સંસ્થાના આચાર્ય, મેનેજર, અધ્યાપક, કારકુન જેવી દરેક જવાબદારીઓ એકલા હાથે ઉઠાવતા હતા. ક્યારેક રાજકોટ કે મોરબી જવું પડે તો બસમાં ધક્કા ખાતા ખાતા જતા અને રાજકોટ કે મોરબીમાં રિક્ષામાં બેસવાની વાત તો દૂર રહી સિટી બસમાં પણ બેસતા પહેલા વિચાર કરતા.

વિદ્યાર્થિઓ પણ કેવા. ઉપદેશક વિદ્યાલયમાં મોટી આયુના જ વિદ્યાર્થિઓ આવે. તેમને વશમાં રાખવા અને સંભાળવા એ પણ એક પડકાર જનક કામ છે. પણ તેમનું વ્યક્તિત્વ જ એવું હતું કે તેમની સામે આંખ ઊંચી કરીને જોવાનું સાહસ પણ વિદ્યાર્થિઓમાં નહોતું. તેમ છતાં કોઈ વિદ્યાર્થી ઉપર ગુસ્સે થયા હોય એવું તો જવલ્લેજ બનતું. કોઈને થપ્પડ મારવાનું તો ક્યારેય બન્યું જ નથી. મને લાગે છે કે તેમના ત્યાગ અને તપ તેમની આંખોમાં એવા છલકાતા કે વિદ્યાર્થિઓની આંખો જ અંજાઈ જતી. વિદ્યાર્થિઓ જમવા બેઠા હોય ત્યારે અચાનક જઈને જોવું કે ભોજન કેવું છે, રાત્રે ગમે ત્યારે અચાનક જ રાઉન્ડ પર નીકળવું, વિદ્યાર્થી માંદો હોય તો દિવસમાં ચાર-પાંચ વખત તેના સમાચાર લેવા વિગેરે. કહેતા કે અહીં તો વિદ્યાર્થીના માતા-પિતા બધું જ હું છું, તેમના સુખ-દુઃખમાં ભાગ લેવો એ મારા આચાર્યજીની શિક્ષા છે. (આચાર્યજી ગુરુકુલ કાંગડીના પ્રારમ્ભકિ સ્નાતકોમાંના એક હતા અને સ્વામી શ્રદ્ધાનન્દજીને પોતાના આચાર્ય માનતા હતા.

૧૯૭૫માં આર્યસમાજની સ્થાપનાના સોવર્ષની ઉજવણી દિલ્હીમાં ઉજવાઈ હતી. દિલ્હીના રામલીલા મેદાનમાં ટંકારામાં આવેલ ચિત્રાવલી પ્રદર્શિત કરવાની હતી. તે માટે મોટો સ્ટોલ ફાળવાયો હતો. સવારે લગભગ નવ વાગ્યે સ્ટોલ માટેનો પ્લોટ ફાળવાયો. આચાર્યજી સાથે બીજા પાંચ વિદ્યાથી હતા. સ્ટોલની જમીન પર ગયા પછી વિદ્યાર્થિઓને કહ્યું કે તમે ચિત્રાવલી ગોઠવવાની અને બીજી વ્યવસ્થા કરો, હું મારી પુત્રી આશાને ત્યાં જઈને આવું છું. પછી આપણે સાથે જમીશું. (આશા બહેન દિલ્હીના ધનાઢ્ય પરિવારના સદસ્ય હતા.) લગભગ એક વાગ્યે આચાર્યજી અને એમના જમાઈ ગાડીમાં પાછા આવ્યા. વિદ્યાર્થિઓને કહે કે ગાડીમાં જમવાની વસ્તુઓ છે થાળી બનાવો. એક વિદ્યાર્થીએ પાંચ થાળી બનાવી. એ જોઈને આચાર્યજીએ પુછ્યું કેમ પાંચ જ થાળી બનાવી છે, તો જવાબ મળ્યો કે તમે તો જમાઈજીના ઘરે જમીને આવ્યા હશોને. આચાર્યજીએ મીઠી ગુસ્સા સાથે કહ્યું : નાદાની ન કરો. તમે અહીં ભૂખ્યા બેઠા હો અને હું જમીને આવું એ કઈ રીતે બની શકે!

ઘણી બધી યાદો છે જે દિલમાંથી નથી જતી એટલે જ કહું છું વો જબ યાદ આયે આંસુ બહે આંખો સે

મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતીજીની પુણ્ય જન્મભૂમિ ટંકારામાં
તમારા સંતાનોને ભણાવવાનો અમુલ્ય અવસર

તમારા સંતાનોને વૈદિકધર્માનુરાગી, પૂર્વજો અને માતા-પિતા પ્રત્યે આસ્થાવાન, ચરિત્ર અને, શરીર અને વિદ્યાબળથી સમ્પન્ન બનાવવાનો અવસર શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ સંચાલિત ઉપદેશક મહાવિદ્યાલયમાં ઉપલબ્ધ છે. ચોથું ધોરણ પાસ બાળકને પાંચમાં ધોરણથી પ્રવેશ આપવામાં આવશે. વિદ્યાલય આર્ષ વિદ્યાપીઠ જઝ્ઝર (ગુરુકુલ જઝ્ઝર) દ્વારા મહર્ષિ દયાનન્દ યુનિવર્સિટી રોહતક (હરિયાણા) સાથે સલગ્ન છે. ઋષિ દયાનન્દે સંસ્કારવિધિ અને સત્યાર્થપ્રકાશમાં બતાવેલ વિધિ પ્રમાણેનો પાઠ્યક્રમ છે જેને યુનિવર્સિટીએ માન્યતા આપેલ છે. પ્રવેશ લેવા માટે સમ્પર્ક કરોઃ-

આચાર્ય રામદેવ શાસ્ત્રી,
શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ, ટંકારા, જિ. મોરબી, પિનઃ ૩૬૩૬૫૦,
મોબાઈલઃ ૯૯૧૩ ૨૫૧ ૪૪૮

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अप्रिथधक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

सुखी परिवार

❒ आर्यमुनि वानप्रस्थ

इस सृष्टि में प्रत्येक वस्तु की उपयोगिता है कोई भी वस्तु पूरी तरह निरर्थक नहीं है। प्रत्येक वस्तु का अपना महत्त्व होता है इस सृष्टि की सर्वोत्तम रचना होने के कारण मनुष्य को चाहिए कि अपनी शारीरिक, आत्मिक एवं मानसिक शक्तियों का विकास करे ताकि वह सांसारिक पदार्थो का सही-सही उपभोग कर सके और अपना परलोक भी सुधार सके।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मनुष्य के पुरुषार्थ चतुष्टय हैं। संसार के भोग्य पदार्थो में बड़ा आकर्षण है, परन्तु धर्म पूर्वक, त्याग पूर्वक भोग करने में ही मनुष्य का कल्याण है। मनुष्य संसार में रहकर ही अपने चरम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। यह तभी सम्भव है जब वह अपने सभी कार्यो को ईश्वर को समर्पित करके 'यज्ञ' रूप में करे।

हम सब सुखी होना चाहते हैं, परन्तु सुख हमसे दूर भागता रहता है। कारण? हम सुखी होने के कार्य नहीं करते प्रायः यह समझा जाता है कि सुख के साधन हैं, धन-धान्य, भाई-बन्धु, जमीन-जायदाद, मकान, सोना-चाँदी आदि आदि परन्तु ऐसा समझने वाले प्रायः भ्रमित ही रहते हैं और सुख उनसे दूर ही दूर भागता है। वास्तव में मानसिक शान्ति ईश्वर की उपासना से प्राप्त होती है। जो मनुष्य अपने को ईश्वर की शरण में ले जाता है उसे ही सच्ची शान्ति और सुख मिलता है।

कठोपनिषद् में कहा गया है कि दो मार्ग हैं, श्रेय और प्रेय। प्रेय आकर्षक है, परन्तु सच्चा सुख प्राप्त नहीं कराता, श्रेय-श्रेयमार्ग के पथिक की आत्मा निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर रहती है। वह सदैव ईश्वर के सान्निध्य में रहता हैं। उसे न दुःख, न भय न किसी वस्तु का अभाव रहता है। क्योंकि वह ईश्वर की समीपता को अनुभव करते हुये सदैव सन्तुष्ट रहता है। आज के युग में मानव भौतिकता की चकाचौंध में इतना अन्धा हो गया है कि उसे भौतिक पदार्थो की प्राप्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं दीखता। उसे इस बात की किंचित भी चिन्ता नहीं होती कि उसके अपने कामों से देश व समाज का कितना अहित हो रहा है। ऐसा स्वार्थी व्यक्ति अन्त में स्वयं भी दुःखी होकर ही मरता है।

सुख और दुःख के अर्थ सभी जानते हैं, जो इन्द्रियों को प्रिय लगे, वही सुख और जो इन्द्रियों को प्रिय न लगे वह दुःख है। वैसे सुख और दुःख आत्मा के लक्षण हैं। पर ये उसके स्वाभाविक लक्षण नहीं नैमेत्तिक हैं। हम अपने कर्मो से ही सुखी और दुःखी होते हैं। अतः जो भी सुखी होना चाहता है अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखे। मर्यादाओं का पालन करे। उसे बुरा न देखना चाहिये, न बोलना चाहिए, न सुनना चाहिये और न बुरा चिन्तन करना चाहिए।

समाज कैसे सुखी हो इस पर विचार करते समय हमें समाज की छोटी इकाई परिवार पर ध्यान देना होगा। परिवार में भी इकाई के रूप में परिवार के सदस्य होते हैं। जिनमें पहली पीढ़ी पितामह, पितामही, दूसरी में पिता, माता व तीसरी में बच्चे होते हैं। इनमें अन्य व्यक्ति भी होते हैं जिनसे हमारा रक्त का सम्बन्ध होता है। परिवार सुखी होगा तो समाज भी सुखी होगा और राष्ट्र भी। आर्य लोग एक प्रार्थना करते हैं जो बड़ी सार्थक है 'सुखी बसे संसार सब दुःखिया रहे न कोई।' परिवार में एक दूसरे के प्रति कर्त्तव्य की भावना, सेना सुश्रुषा, देखभाल, छोटों से अच्छे संस्कार देने की योजना, सहृदयता आदि गुण हों तो परिवार सुखी रहता है।

माता-पिता तो होते ही हैं वे सास व ससुर के रूप में भी होते हैं। उनका जैसा मधुर प्रेम का व्यवहार अपने पुत्र, पुत्रियों के लिए होता है। ऐसा ही बहुओं के साथ भी करें कभी कठोर शब्दों का प्रयोग न करें। सदैव अपने से छोटों का पथ-प्रदर्शन तथा सहायता करने को तैयार रहना चाहिए। उनकी गल्तियों को क्षमा करें और उनका उत्साह बढ़ायें अपना दृष्टिकोण उदारवादी रखें और उनकी आवश्यकतानुसार रूपये पैसे से भी (यदि सामर्थ्य है तो) मदद करते रहें। विभिन्न अवसरों पर एक दूसरे को उपहार देते रहें। सास ससुर को अपनी सारी जिम्मेदारियाँ बहू-बेटे को सौंप देनी चाहिये, वेद के अनुसार बहिन-बहिन से और भाई-भाई से तथा बहिन भाई से और भाई बहिन से प्रेम का व्यवहार करें मीठे, मधुर, प्रिय, कल्याणकारी वचन बोलें पुत्र माता-पिता का आज्ञाकारी हो और अपने बहिन भाईयों के साथ मिलकर रहे, बाँट कर खाये।

परिवार के सभी सदस्यों में एकता होनी चाहिए। आपस में सौहार्द बना रहे, प्रेम बना रहे, एक दूसरे के प्रति त्याग की भावना होनी चाहिए। परिवार के सब सदस्य स्वस्थ हों, दुर्गुण, दुर्व्यसनों से दूर रहें, आहार-विहार सात्विक हो सब लोग अपनी-अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य के अनुसार अपने कर्त्तव्यों का पालन करें। लोकलाज से बचें कभी भी छिपा कर धन सम्पदा का संचय न करें। सदैव एक दूसरे की सहायता के लिए तत्पर रहें। स्वाध्याय अवश्य करें परिवार के बच्चों को पास बैठाकर उन्हें राष्ट्र प्रेम, देश प्रेम एवं नैतिकता की बातें बतायें। महान् पुरुषों के जीवन चरितों से उन्हें अवगत कराते रहें।

आज कल परिवार चरितों क्यों टूट रहे हैं। हमारे अन्दर स्वार्थ की भावना घर करती जा रही है। सेवा भावना का अभाव है। हम त्याग नहीं बल्कि संग्रह में विश्वास करते हैं। जब मनुष्य केवल अपना-अपना ही सोचता है तो वह कभी भी सुखी नहीं रह सकता। आजकल शासक भी चरित्रवान लोग नहीं है। संसद में सांसद ऐसे लड़ते हैं जैसे वे माननीय न होकर सामान्य लोग हैं। उन पर सरकार का बहुत अधिक धन व्यय होता है। उनकी सुरक्षा में करोड़ों रूपये व्यय होते हैं जबकि उन्हें तो कोई खतरा होना ही नहीं चाहिए। यह सब संस्कारों की कमी के कारण है।

अतः सुखी रहने के लिए हमें कर्त्तव्यपरायण, परोपकारी, निःस्वार्थ, सेवाभाव वाला, ईश्वर विश्वासी और सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करने वाला होना चाहिए। त्याग पूर्वक भोग करें। अपने साधनों में रहना सीखें। सदैव दूसरे की सहायता को तत्पर रहें। ये कुछ छोटी-छोटी बातें हैं जो मनुष्य एवं परिवार को सुखी बनाने में सहायक हैं।

– 100, न्यू प्रभातनग, मेरठ (उ.प्र.)

संयम जीवन : आदर्श जीवन

संयम का पथ प्यारा-प्यारा, करता जीवन में उजियारा।
शान्ति सुधा की बरसे धारा, मोक्ष मार्ग का पथ है न्यारा।।

संयम ही जीवन में सुख का सफल साधन है। संयमी पुरुष अपने मन, वचन और शरीर को नियंत्रित रखता है, उन्हें उच्छृंखल नहीं होने देता। आचार, विचार एवं परस्पर व्यवहार में विकृतियों का प्रवेश न होने देना संयम है। इन्द्रियों के विषय-सेवन को नियंत्रित करना संयम है। इच्छाओं को रोक कर इन्द्रियों को वश में करना संयम है।

गृहस्थ हो या गृह त्यागी, जो भी अपने जीवन को पवित्र और सुखमय बनाना चाहता है, उसे संयमी बनना चाहिए। संयम और तप से विहीन जीवन किसी भी दृष्टि से सराहनीय नहीं बन सकता। कुटुम्ब, समाज, देश आदि की दृष्टि से वही जीवन धन्य माना जा सकता है जिसमें संयम और तप मौजूद हो।

– श्री अनिल कुमार, गुलाबबाड़ी, लाडपुरा, कोटा-324006

मन का पिंजरा खुल गया

❒ मयंक गुप्ता

बात उस समय की है, जब मेरी उम्र अट्ठारह वर्ष थी। उस समय मेरा एकमात्र शौक पक्षियों को पालना था। मैंने पक्षियों के लिए एक बड़ा पिंजरा भी पिताजी से कहकर मंगवा लिया था। मेरे शौक की शुरुआत एक रंगीन तोते से हुई। फिर मैं एकाएक चिड़ियों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी करता गया। मेरे पास करीब चिड़ियों की पचास से अधिक प्रजातियां होगी। मैं अपने मित्रों व व्यवहारियों के बीच पक्षी प्रेम के कारण विशेष आकर्षण का केन्द्र बन चुका था। मेरा शौक यहां तक बढ़ चुका था कि मैं दिन की शुरुआत चिड़ियों की चहचहाहट सुनकर व दिन का समापन उन्हें देखकर ही करना पसंद करता था। इस पक्षी प्रेम को देखकर भले ही सब खुश हों, पर हमारे बाबाजी मुझसे नाखुश रहते थे, क्योंकि उन्हें किसी भी जीव को बंदिश में रखना पसंद न था। वे इसी बात को लेकर हमें वह घर के सभी लोगों को फटकार लगाते पर मैं रो-रोकर अपनी बात मनवा लेता था। पर वे हमेशा यही कहते थे कि बेटा यह ठीक नहीं होता है कि अपनी खुशी के लिए दूसरों की खुशी छीनना। एक दिन मैं मंडी से सब्जी लेकर लौट रहा था, तभी एक सड़क दुर्घटना में मेरी दाई टांग में फ्रेक्चर हो गया। एक्सरे कराने पर पता चला कि टांग में दो जगह से हड्डी टूट गई है। डॉक्टरों ने तुरंत मेरी टांग में कुछ प्राथमिक उपचार के बाद प्लास्टर चढ़ा दिया और करीब चार माह तक बिस्तर पर लेटने की सलाह दी। चूंकि फ्रेक्चर टांग में घुटने के करीब था। इतना सुनकर मानो मेरे पैरों तले धरती खिसक गई हो, मैं सोच रहा था कि चार महीने एक ही बिस्तर पर, एक ही कमरे में मन घुटने लगेगा, अब मैं एक कैदी की तरह अपने आपको महसूस कर रहा था, जो न तो दौड़ सकता है और न ही कारागार में खुली हवा ले सकता है। तभी एक दिन हमारे बाबाजी हमारा मन बहलाने के लिए उन चिड़ियोंका पिंजरा हमारे कमरे में खिसकाते हुए लाए। मैं उन चिड़ियों को देखकर अपने गमों को भूल चुका था। मैं आज बहुत खुश था।

कुछ दिनों बाद अचानक चिड़ियों को देखकर मैंने सोचा कि जो हाल मेरा आज हड्डी टूट जाने के बाद हुआ है, ऐसा ही कुछ हाल इन चिड़ियों का भी होगा, जिन्हें मैंन पिंजरे में बंद कर रखा है। वे भी मेरी तरह खुले आसमां में उड़ना चाह रही होंगी, जिस तरह मैं दौड़ना चाह रहा हूं, वे भी अपने पंछी साथियों के साथ झुंड में उड़ना चाह रही होंगी, जिस तरह मैं अपने मित्रों के साथ घूमना चाह रहा हूं। आज मुझे अपने स्वार्थ पर लज्जा आ रही थी। मुझे आज अपने बाबाजी की बात का अर्थ स्पष्ट समझ आ रहा था। मैंने उसी पल धीरे-धीरे कोशिश कर पिंजरे को खिड़की के पास कर खोल दिया। मैं देख रहा था कि आजादी क्या होती है। चिड़िया विशेष चहचहाहट के साथ आसमां में करतब दिखा रही थी। शायद वे आज आसमां को छूना चाहती थी। उन चिड़ियों को उड़ता देख मुझे भी एहसास हो रहा था कि मानो मैं भी जल्दी ही बंदिश से छूटकर इन चिड़ियों की तरह ही आजादी से हर वह कार्य कर सकूंगा, जिसके लिए आज मैं स्वतन्त्र नहीं हूं। तब से आज भी मैं हर किसी को वही बात समझाता हूं, जो बात मुझे बाबाजी समझाते थे।

आजादी शरीर की ही नहीं, मन की भी होती है।'

– फिरोजाबाद

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

समाचार दर्पण

ऋषि जन्म भूमि टंकारा को रेलमार्ग से जोड़े मांग पर केन्द्रीय रेलमन्त्री से सकारात्मक भेंट

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट की एक बहुत पुरानी मांग जो कि गुजरात सरकार एवम् केन्द्रीय सरकार के पास कई वर्षो से विलम्बित पड़ी हुई है। इसी मांग को पुनः वर्तमान केन्द्रीय रेल मन्त्री श्री सुरेश प्रभु जी से टंकारा ट्रस्ट के प्रतिनिधि मण्डल ने बैठक की। इस प्रतिनितिध मण्डल का नेतृत्व टंकारा ट्रस्ट की ट्रस्टी श्री योगेश मुंजाल जी कर रहे थे। इनके साथ ट्रस्ट के परम सहयोगी श्री राजीव चौधरी एवम् श्रीमती अर्मिता पाल भी थी। उपरोक्त मांग के प्रार्रम्भिक काल से ही ट्रस्ट को सहयोग दे रहे प्रसिद्ध उद्योगपति/शिक्षाविद् डॉ. सुनील चावला भी साथ थे जिनके सहयोग से यह बैठक सम्भव हो पाई।

केन्द्रीय रेल मन्त्री श्री सुरेश प्रभु जी के साथ सर्वश्री राजीव चौधरी, योगेश मुंजाल, सुनील चावला एवम् श्रीमती अमृता पाल जी।

प्रतिनिधि मण्डल बैठक के उपरान्त इतना उत्साह से भरा था कि उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया के हमारा यह कार्य वर्तमान के केन्द्रीय रेल मन्त्री श्री सुरेश प्रभु जी के सहयोग से अवश्य पूर्ण हो जायेगा। आपने जिस सहजता एवम् सरलता से टंकारा ट्रस्ट के विषय में जानकारी प्राप्त की और अपने कार्यालय के वशिष्ठ तकनीकी सलाहाकार को बुलाकार प्रतिनिधि मण्डल के सामने विचार-विमर्श किया और जानकारी दी कि हम शीघ्र ही नई रेल लाइनें बनाने का एक नया उपकर्म की स्थापना करने जा रहे हैं जो कि रेलवे बोर्ड से पृथक होगा और वह रेलवे बोर्ड को सलाह देगा कि किन-किन जगहों पर रेल लाइनें बिछानी सम्भव है जिससे की आगे का कार्य तीव्र गति से चल सके। इसमें राज्य सरकार का भी व्यय में हिस्सा होगा और केन्द्रीय सरकार का भी। इसलिए शीघ्र ही गुजरात की मुख्य मन्त्री श्रीमती आनन्दीवेन पटेल को भी सम्पर्क करने का प्रयास किया जा रहा है। प्रतिनिधि मण्डल को पूर्ण आशा है कि निकट भविष्य में शीघ्र ही एक सुखद् समाचार प्राप्त होगा।

ऋषि जन्म भूमि टंकारा में बड़ा जल शोधक संयंत्र स्थापित

टंकारा स्थित महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय के परिसर में 150 से अधिक ब्रह्मचारी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। छोटे जल शोधक संयंत्र से पानी की अधिकता होने के कारण संयंत्र उसे पूर्ण रूप से शुद्ध नहीं कर पा रहे थे। इस कारण से प्रतिदिन 10000 लीटर से ऊपर की क्षमता रखने वाला बड़ा जल शोधक संयंत्र स्थापित किया गया। जिससे अब भोजनालय के ऊपर पेय जल की टंकी के नीचे ही इस संयंत्र को लगा दिया गया है। जिससे अब ब्रह्मचारियों को पूर्ण रूप से स्वच्छ जल बिना किसी रूकावट प्राप्त हो रहा है। यह यंत्र टंकारा ट्रस्ट के परम सहयागी श्री सतीश कुमार जी दुआ (जिनसे प्रत्येक ऋषि भक्त भली भांति परिचित है।) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है। राजकोट स्थित एक कम्पनी द्वारा इस संयंत्र को लगाया गया है।

सहायता शिविर एवं वेद प्रचार कार्यक्रम

ओड़िशा के कोरापुट जिला गो हत्या तथा गरीबी के कारण प्रसिद्ध हैं। जिस कारण विभिन्न मत वाले अपने मत के विस्तार में लगे हुये हैं। अतः यहां के लोग आर्य समाज के सिद्धान्तों से परिचित होवें, इसी पावन भावना से गुरुकुल हरिपुर, ओड़िशा के तत्वावधान में दो हजार महानुभावों को आर्य समाज एवं वेद से परिचय कराया, 10 परिवारों को वैदिक धर्म में दीक्षित कराया गया, सैकड़ों महानुभावों को मांस, मदिरा आदि अभक्ष्य पदार्थो का सेवन नहीं करने का व्रत दिलाया गया, कार्यक्रम के उपरान्त छः सौ निर्धन परिवारों को 25 किलो चावल एवं एक साड़ी दी गई।

जन्मभूमि टंकारा परिसर में स्थित
श्रीं ओंकारनाथ महिला सिलाई केन्द्र के वार्षिक परिणाम

हर्ष का विषय है उपरोक्त महिला सिलाई केन्द्र गुजरात राज्य का मान्यता प्राप्त सिलाई केन्द्र है और जिसमें वस्त्र सिलाई, हाथ और मशीन की कढ़ाई एवम् फैन्सी वर्क आदि कोर्स सम्मालित है। इसमें इस वक्त 35 बालिकाएं प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। टंकारा एवम् निकटवर्ती सभी सिलाई केन्द्रों का वार्षिक परिक्षा केन्द्र भी टंकारा परिसर ही है। वर्ष 2013-2014 के परिणाम जो कि 100 प्रतिशत है को आपके सूचनार्थ प्रेक्षित कर रहे हैं।

गारमैन्ट मैंकिग (प्रथम वर्ष): - शेरशीया याश्मीन बहन एच. (67.3%), बादी तब्बसुम बहन एच. (67.2%), डामोर सुरेखा बहन आर. (65.1%), गामीत जागृति बहन पी. (64.3%), जीवाणी आरती बहन एन. (64.1%), तिवारी अनिता बहन डी. (63.2%), कडीवार रूबीना बहन एच. (63.2%), चौहाण फातमा बहन जे. (62.1%), चौहाण हाज़रा बहन जे. (62.0%), सोहर्वदी हसीना बहन एच. (61.2%), बादी कौशर बानु एम. (61.2%), शेरशीया नशीम बहन एच. (61.2%), गोस्वामी वशाली बहन आर. (56.2%), भालोडीया प्रीति बहन पी. (55.3%)।

हैन्ड मशीन ऐम्ब्रोयडरी तथा फेन्सी वर्क (द्वितीय वर्ष):- बादी तयबा बहन यु. (77.2%), बादी तसरीफ बहन यु. (74.2%), धार्मिक जोगेश्वरी एस. (67.2%)।

आर्य मान्यताओं से ओतप्रोत, आर्य वीरांगना, आर्य समाज का गौरव
प्रो. डॉ. शशि प्रभा कुमार को राष्ट्रपति सम्मान

स्वाधीनता दिवस के अवसर पर प्रतिवर्ष देश और विदेश के विभिन्न विद्वानों, जिन्होंने संस्कृत, पर्शियन, अरेबिक और पाली तथा प्राकृत भाषाओं में मौलिक शोध किया हो, को देश के राष्ट्रपति द्वारा एक सम्मान-पत्र प्रदान किया जाता है। इस वर्ष प्रो. शशिप्रभा कुमार, उप-कुलपति, Sanchi University of Buddhist-Indic Studies, भोपाल, मध्यप्रदेश को संस्कृत में उनके उच्च-स्तरीय कार्य के लिए सम्मानित किया गया। प्रो. शशिप्रभा कुमार इससे पहले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग की अध्यक्ष एवं वर्तमान में दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्ष हैं। डॉ. कुमार एक आर्य परिवार से संबंध रखती हैं और ऋषि दयानन्द के विचारों का गंभीरता से अनुसरण करते हुए देश विदेश में इसका प्रचार-प्रसार भी करती है। 'टंकारा' परिवार प्रो. शशि प्रभा कुमार को इस राष्ट्रपति सम्मान के लिए बधाई देते हुए उनके स्वस्थ, सक्रिय और सफल दीर्घ-जीवन की कामना करता है।

विशिष्ठ आर्य सम्मान से सम्मानित

आर्य जगत् के वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता व आनन्दधाम उधमपुर, जम्मू कश्मीर के मुख्य संरक्षक व निदेशक तथा अन्य अनेक आश्रमों, साहित्यिक संस्थाओं के संचालक एवं संरक्षक <u>महात्मा चैतन्यमुनि जी</u> को गत दिनों गुरुकुल आमसेना, ओड़िसा में 'विशिष्ठ आर्य सम्मान' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान केन्द्रिय ग्रामीण विकास राज्य मन्त्री श्री सुदर्शन भगतजी के हाथों दिया गया।

उल्लेखनीय है कि महात्मा जी की अब तक लगभग पच्चास साहित्यिक एवं आध्यात्मिक पुस्तकें प्रकाशित हुई है तथा इन्हें अब तक साहित्य अकादमी सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्यवीर संचालक, वेद प्रचार अधिष्ठाता, महामन्त्री तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष व कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में इन्होंने अभूतपूर्व सेवा की है जिसके लिए इन्हें सभा की ओर से सम्मानित भी किया गया।

आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना द्वारा आर्य समाज का स्थापना दिवस 29.03.2015 दिन रविवार को बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया गया। कार्यक्रम प्रात: 9 बजे यज्ञ के द्वारा प्रारम्भ हुआ जिसके मुख्य यज्ञमान श्री इन्द्रवीर मल्होत्रा एवं उषा रानी मलहोत्रा, श्री आत्मप्रकाश एवं श्री लाज वर्मा एवं श्री सुभाष अवरोल श्रीमती रीटा अवरोल एवं श्री हिमांशु श्रीमती सोनम रहे, कार्यक्रम कि अध्यक्षता आर्य समाज जिला सभा की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा ने की यज्ञोपरांत डॉ. योगेश शर्मा एवं डॉ. निमिता शर्मा ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपने सुमधुर भजन प्रस्तुत किए। मुख्य वक्ता श्री श्रवण कुमार बला ने अपने वक्तव्य में कहा कि ऋषिवर देव दयानन्द ने अपने आर्य समाज जैसी आन्दोलनकारी संस्था स्थापित कर देश को पराधीनता, अज्ञानता अन्ध विश्वास, रूढ़िवाद आदि कुरीतियों से मुक्ती दिलाई।

❑❑❑

वैदिक ज्ञान विज्ञान संस्थान का प्रथम स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर पर्व बड़े ही हर्षोल्लास के साथ आर्यसमाज फ्रीगंज के प्रांगण में आयोजित किया गया। इस पावन अवसर पर यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं वैदिक साहित्य का विमोचन किया गया। पवित्र वेद मन्त्रों के द्वारा पावन यज्ञ का आयोजन पं. विश्वेन्द्रार्य के द्वारा किया गया। भजन कु. बबलि आर्या, श्रीमती मिथिलेश छावड़ा, श्रीमती कान्ता बंसल एवं महर्षि दयानन्द अनाथालय की बच्चियों द्वारा प्रस्तुत किये गये। प्रवचन पं अशोक शास्त्री द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने नव सवत्सर एवं वैदिक ज्ञान विज्ञान के विषय में बताया, आज के दिन ही परमेश्वर ने इस संसार का सृजन किया था, वेद समस्त सत्य विद्याओं का पुस्तक है। भगवान राम, कृष्ण, दयानन्द आदि महानपुरुषों ने वेद विद्यालय को अपने जीवन में धारण किया था।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कोटा के प्रॉगण में आज चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की पूर्व सन्धया पर नव संवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में देवयज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ की मुख्य यजमान प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने विद्यालय परिवार के 150 सदस्यों के साथ विद्यालय के धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य के ब्रह्मत्व में पवित्र वेद मन्त्रों के साथ आहुतियाँ प्रदान की। इस अवसर पर शोभाराम आर्य ने नव संवत्सर के महत्व एवं काल गणना का परिचय दिया। प्राचार्या सरिता रंजन गौतम ने नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ साथ गतवर्ष की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए उन्हें आगे भी दोहराने की बात कही तथा शैक्षणिक व सहशैक्षणिक गतिविधियों में स्कूल का नाम रोशन करने वाले विद्यार्थियों और शिक्षकों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की साथ ही नववर्ष पर श्रेष्ठ संकल्प लेकर उनको क्रियान्वित करने की बात कही। कार्यक्रम का समापन प्रसाद वितरण शान्तिपाठ एवं जयघोष के साथ हुआ।

❑❑❑

आर्य केन्द्रीय सभा, पानीपत के तत्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस एवम् राम नवमी महोत्सव आर्य समाज मॉडल टाऊन में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। मुख्य वैदिक प्रवक्ता डॉ. जयेन्द्र जी शास्त्री, प्राचार्य आर्ष गुरुकुल नोएडा (उ.प्र.) ने आह्ववान किया कि यदि हम बच्चों में वैदिक संस्कार भरना चाहते हैं तो उन्हें गुरुकुलों में पढ़ाएं। नहीं तो गरीब बच्चों की आर्थिक सहायता देवें ताकि वे अपनी शिक्षा-दीक्षा गुरुकुलों में प्राप्त कर सकें। उन्होंने ने कहा कि यदि हम श्री राम, श्रीकृष्ण और स्वामी दयानन्द को भारतीय संस्कृति से निकाल दें, तो हमारी संस्कृति शुन्य हो जाएगी। हमें उनके पथ को पथगामी बनना चाहिए। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ. जयेन्द्र जी शास्त्री तथा वेद पाठ उदूगाता श्री ओम प्रकाश जी शास्त्री थे। भजनोपदेश श्री दिनेश दत्त जी का रहा। समारोह की अध्यक्षता श्री इन्द्र मोहन जी आहूजा ने की।

'ईश्वर का स्वरूप' एक विचारोत्तेजक संगोष्ठी

इस अवसर पर मंचासीन श्री आनन्द चौहान, डा. अशोक चौहान, डॉ. अमिता चौहान, श्री धर्मपाल आर्य एवम् श्री योगेश मुंजाल

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 5 अप्रैल रविवार को चंद्रवती स्मारक ट्रस्ट देसराज परिसर आर्य ऑडिटोरियम, दिल्ली में 35 विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं तथा रेजिडेन्ट वेलफेयर एसोसिएशनों के संयुक्त प्रसाय से उपरोक्त संगोष्ठी सामाजिक जागरूकता के लिए निम्नलिखित प्रख्यात शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों के तर्कपूर्ण उद्‌बोधन दिये। **हिन्दू दर्शन** पर स्वामी राघवानन्द जी, प्रधान श्री सनातन धर्म पतिनिधि सभा दिल्ली, **इस्लाम दर्शन** पर प्रोफेसर एम एच कुरैशी, पूर्व प्रवक्ता जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, **ईसाई दर्शन** पर डॉ. पी. जैकब चेरियन, विभागाध्यक्ष सेंट स्टीफेंस कॉलेज, डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर सेंट जॉन कॉलेज आगरा एवम् **वैदिक दर्शन** पर डॉ. वागीश आचार्य, गुरुकुल महाविद्यालय ऐटा तथा डॉ. विनय विद्यालंकार, एसोसिएट प्रोपेसर राजकीय पी.जी. कॉलेज रामनगर नैनीताल उपस्थित थे।

कार्यक्रम में उपस्थित श्री बृजमोहन मुंजाल, चेयरमैन हीरो ग्रुप एवम् स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती गुरुकुल गौतम नगर अपने आर्शीवचनों से संगोष्ठी हेतु शुभकामना प्रेषित की। इसी अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप डॉ. अशोक के. चौहान, संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी विश्वविद्यालय व शिक्षण संस्थान व चेयरमैन ए.के.सी. ग्रुप एवम् डॉ. अमिता चौहान, चेयरमैन एमिटी इन्टरनेशनल स्कूल्स तथा श्री आनन्द चौहान डायरेक्टर एमिटी शिक्षण संस्थान उपस्थित थे। साथ में श्री योगेश मुंजाल, श्री धर्मपाल आर्य, श्री राजीव आर्य एवम् श्री अजय सहगल मंच पर उपस्थित थे।

(पृष्ठ 1 का शेष)

15 नवम्बर 1938 को 74 वर्ष की आयु में यह वीर पुरुष सदैव के लिए चिरनिद्रा में सो गया। महात्मा जी के परम शिष्य सिकन्दर हयात जो कि विभाजन से पूर्व पंजाब के मुख्यमन्त्री थे, महात्मा हंसराज जी के देहावसान पर शोक में मुस्लिम लीग के विरोध के बावजूद असैम्बली को स्थगित कर दिया और कहा आज हम अनाथ हो गये है, कहा

महात्मा जी ने सारा जीवन देश सेवा और परोपकार में बिता दिया। दयानन्द ऐंग्लो विद्यालय का मुख्य उद्देश्य कि पराधीन भारत में लार्ड मैकाले ने भारत की शिक्षा व संस्कृति को पाश्चात्य में बदल दिया था और प्रत्येक शिक्षा विद्यालयों में परोक्ष व अपरोक्ष रूप से ईसाइ धर्म का प्रचार होने लगा था, भारत के गुरुकुलों की स्थिति उतनी अच्छी नहीं थी जो इसका मुह तोड़ उत्तर दे सके। यह कार्य डी.ए.वी. कॉलेज में होने लगा और हिन्दी संस्कृत के अतिरिक्त अंग्रेजी शिक्षा देकर देश भक्त युवकों को मुह तोड़ उत्तर देने के लिए तैयार करने लगे। फलस्वरूप डी.ए.वी. कॉलेजों से राष्ट्र भक्त युवक युवतियाँ बनने लगे और स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए तैयार रहने लगे। अंग्रेज सरकार ने अपने गर्वनरों को आदेश दे रखा था कि दोनों शिक्षा विद्यालयों पर कड़ी नजर रखी जाये। महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित आर्य समाज के क्रान्तिकारी संगठनों द्वारा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन को चिन्गारी निकलने लगी। फलस्वरूप अस्सी प्रतिशत आर्य समाजियों ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपने गरम-गरम रक्त से बलिदान देकर भारत मां का तिलक किया था। आज आवश्यकता है महात्मा हंसराज की के उद्देश्य को पुनः कॉलेजों में प्रारम्भ करने की। प्रार्थना सभा में आठ प्रार्थना मन्त्र व समय समय पर यज्ञ करना तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ग्रन्थों को पाठ्यक्रम में शामिल करना आदि आदि। आचार्यो व विद्यार्थियों को अपनी सकारात्मक सोच बनानी होगी तभी शिक्षा का मूल उद्देश्य सफल होगा। भारत के समस्त जागरूक विद्वान आर्यो को डी.ए.वी. कॉलेजों की वर्तमान स्थिति और महात्मा हंसराज जी के मूल उद्देश्यों को ध्यान में रखकर समीक्षा करके, डी.ए.वी. कॉलेजों की दशा व दिशा बदलने में आगे आना होगा। - गढ़निवास मोहकमपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड, मो. 09411512019

(सभी पाठकों के सूचनार्थ, आज डी.ए.वी. संस्थान के प्रमुख के नाते महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के पौत्र आदरणीय श्री पूनम सूरी जी अपनी सेवाएं दे रहे हैं और महात्मा हंसराज के उद्देश्य को सामने रखकर वैदिक मान्यताओं को पुनः स्थापित कर रहे हैं।) - सम्पादक

राज्यपाल महोदय से भेंट

आर्यसमाज अपने स्थापना काल से समाज सुधार के बहुत कार्य किये हैं व करता आ रहा है, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने रूढ़िवाद को समाप्त करने के लिए कार्य किये। आर्य संस्कृति श्रेष्ठ संस्कृति है, मैंने महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित सत्यार्थ रचित सत्यार्थ प्रकाश को कई बार पढ़ा, मैं आर्यसमाज से प्रभावित हूं। उक्त उद्बोधन राजस्थान के राज्यपाल महामहिम कल्याण सिंह ने आर्यसमाज प्रतिनिधि मण्डल से साथ सर्किट हाउस कोटा में व्यक्त किये।

महामहिम श्री कल्याण सिंह का वेदमन्त्रों के उच्चारण से आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने केसरिया साफा, अरविन्द पाण्डेय ने गायत्री मन्त्र का दुपट्टा, डी.ए.वी. स्कूल कोटा की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम व धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य ने पुष्पगुच्छ, जे.एस. दुबे व हरिदत्त शर्मा ने मोतियों की माला पहनाकर एवं समस्त आर्य समाज के पदाधिकारियों ने महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर स्वागत व सम्मान किया।

**शिकायत करके समस्याओं से
बचा नहीं जा सकता
किन्तु जिम्मेदारी उठाकर
समस्याओं को कम जरूर किया जा सकता है।**

प्रवेश प्रारम्भ

कन्या गुरुकुल, महाविद्यालय (सासनी) हाथरस

पत्रालय-कन्या गुरुकुल, पिन-204104, जिला-हाथरस (उ.प्र.)

मो. 09458480781, 09627040999, 09258040119

- ❑ कक्षा शिशु से कक्षा नवम तक। ❑ विद्याविनोद प्रथम वर्ष (11), उत्तर मध्यमा प्रथमवर्ष (11)।
- ❑ विद्याविनोद (समकक्ष इण्टर) तक विज्ञान वर्ग की भी शिक्षा। ❑ विद्यालंकार/वेदालंकार प्रथम वर्ष, शास्त्री प्रथम वर्ष।
- ❑ आचार्य प्रथम वर्ष। ❑ प्रयाग, संगीत समिति, इलाहाबाद की गायन, वादन में संगीत प्रभाकर तक की परीक्षा।
- ❑ आई.टी.आई. (एन.सी.वी.टी.) कम्प्यूटर (कोपा) (कक्षा 10 विज्ञान विषय सहित/इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण) एवं कटिंग स्वीइंग (कक्षा 8 उत्तीर्ण) 1 वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अगस्त माह में प्रवेश प्रारम्भ होंगे।
- ❑ प्रारम्भ से ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी अनिवार्य। प्राचीन विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा।
- ❑ छात्रावास व्यवस्था। रूपये 150.00 भेजकर नियमावली मंगायें। कन्या गुरुकुल अलीगढ़, आगरा मार्ग पर सासनी हाथरस के मध्य स्थित है।

- आचार्या डॉ. पवित्रा विद्यालंकार

स्वाभिमान

स्वावलम्बन

॥ ओ३म् ॥

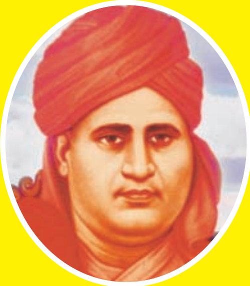

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

के तत्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

दिनांक 18 जून से 28 जून, 2015

स्थान : एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग वैस्ट, दिल्ली

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कन्याओं में शारीरिक, आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धान्तों, संस्कारो का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में अहम् भूमिका निभाने हेतु सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल यह शिविर आयोजित कर रहा है।

सभी प्रान्तीय सभाओं, जिला समाजों व गुरुकुलों में जहां वीरांगना दल की शाखायें लगती हैं से प्रार्थना है कि वे अपनी चुनी हुई वीरांगनाओं को इस शिविर में भेजें।

उद्घाटन : वृहस्पतिवार 18 जून, 2015 सायं 5 बजे

समापन : रविवार 28 जून, 2015 प्रातः 10 से 1 बजे

★शिविरार्थी 18 जून को दोपहर 1 बजे तक जरूर पहुँच जायें। ★ आयु कम से कम 14 वर्ष हो ★ टार्च, लाठी, मग, साबुन साथ लायें। ★ शिविर का गणवेश 2 जोड़ी सफेद सलवार कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद पी.टी. शूज, सफेद मोजे व पहनने के उचित कपड़े साथ लाएं। ★ शिविरार्थी कोई भी कीमती वस्तु, मोबाइल व अधिक पैसा साथ न लाएं। ★ शिविर शुल्क 500 रूपये प्रति शिविरार्थी होगा। पाठ्य पुस्तकें शिविर की तरफ से दी जायेंगी। ★ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 18 जून 2015 दोपहर 1 बजे तक करा लें।

निवेदन: सभी आर्य जनों से निवेदन है कि इस राष्ट्रीय शिविर में सैकड़ों कन्याएं भाग लेंगी, अतः अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्य अनुसार नकद राशि, आटा, दाल, चावल, देसी घी, मसाले आदि देकर पुण्य का लाभ उठाएं।

इस शिविर में योग्य प्रशिक्षिकाओं के निर्देशन में प्रशिक्षण दिया जाएगा।

-: संयोजक :-

साध्वी डॉ.उत्तमायति
प्रधान संचालिका
मो. 08750482498 (दिल्ली)
09672286863 (अजमेर)

मृदुला चौहान
संचालिका
मो. 09810702760

आरती खुराना
सचिव
मो. 09910234595

विमला मल्लिक
कोषाध्यक्ष
मो. 09810274318

-: निवेदक :-

सत्यानन्द आर्य
प्रधान

श्री राजीव आर्य
शिविर संरक्षक

अंजली कोहली
प्रधानाचार्या
मो. 09818110244

अरविन्द नागपाल
मैनेजर

एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग वैस्ट, दिल्ली

प्रशिक्षक: श्रीमती अभिलाषा, श्री सचिन

संस्कृति

सेवा

टंकारा समाचार मई, 2015
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-05-2015
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.04.2015

जिन्दगी हर हाल में ढ़लती है,
जैसे रेत मुट्ठी से फिसलती है,
गिले शिकवे कितने भी हों,
हर हाल में हसते रेहना क्योंकि..
जिन्दगी ठोकरों से ही संभलती है।

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय